बाढ़

विनाश से मुक्ति तक

अध्ययन

(अलवर - भरतपुर)

राजेश रवि
जिनेश जैन

अलवर-भरतपुर

बाढ़

विनाश से मुक्ति तक अध्ययन

संपादन

राजेश रवि-जिनेश जैन

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा, अलवर

राजस्थान

अलवर-भरतपुर

बाढ़

विनाश से मुक्ति तक अध्ययन

प्रकाशन : मार्च, 1997

मूल्य : 32.00 रु.

प्रकाशकः

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा, अलवर

राजस्थान

कम्प्यूटर डिजाईनिगः भारत कम्प्यूटरर्स, अलवर ☎ 22102

मुद्रकः इन्द्रा प्रिन्टर्स (ऑफसेट), अलवर ✆ 20522 P.P.

अनुक्रम

1.	अपनी बात		4
2.	परिचय		5
3.	सूखा बाढ़ मुक्ति	राजेन्द्र सिंह	8
4.	तन ढकने को कपड़े नहीं बचे	डॉ. मैनपाल सिंह	10
5.	पूरा गांव ही बह गया	वैद्य संजय सिंह	12
6.	भयावह स्थिति का सर्वे	एक रिपोर्ट	15
7.	भरतपुर की बाढ़	कन्हैयालाल गुर्जर	16
8.	बाढ़ की पीड़ा	सर्वे रिपोर्ट	18
9.	प्रशासन के कामों से संतुष्टि नहीं	डॉ. मैनपाल सिंह	21
10.	बाढ़ त्रासदी का स्वास्थ्य पर प्रभाव	वैद्य संजय सिंह	23
11.	आकड़ों के आइने में बीमारियां	वैद्य संजय सिंह	27
12.	तबाही के बाद अलवर	सुनील जैन	28
13.	तबाही के बाद भरतपुर	हेमन्त-धर्मपाल	31
14.	क्या हम जागेंगे	एक अपील	33
15.	बाढ़ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	रंजीव, दिनेश, मैनपाल सिंह	34
16.	अलवर-भरतपुर की बाढ़ मुक्ति का प्रयास	राजेन्द्र सिंह	42
17.	अलवर बाढ़ मुक्ति गोष्ठी	ईश्वर सिंह	45
18.	भरतपुर बाढ़ मुक्ति गोष्ठी	हेमन्त भरतपुरी	51
19.	भरतपुर जिला बाढ़ग्रस्त क्यों	शिवरतन सिंह धनकर	54
20.	जहाँ सूखा रहता था वहीं बाढ़ आई	डॉ. श्रेणिक कुमार लुक्कड़	58
21.	चेतना कार्यक्रम	एक रिपोर्ट	60
22.	वर्षा आंकड़ों में		61
23.	मानचित्र		62

अपनी बात

वर्ष 1995 की वर्षा का अंतिम दौर और 1996 की वर्षा का प्रथम दौर अलवर और भरतपुर जिलों के लिये तबाही पैदा करने वाला बना। ग्रामीण इलाकों से लेकर शहर में बनी पॉश कॉलोनियों तक में पानी इस कदर भरा कि लोगों को अपने स्थानों से पलायन तक करना पड़ा आर कुछ स्थानों पर लोग मौत का भी शिकार हुए। बाढ़ के बाद दोनों ही वर्षों में फिर बीमारियों का दौर चला जिसे प्रशासन ने वर्षा जनित बीमारियों का नाम दिया।

वर्षा और उसके बाद बीमारियों पर नियंत्रण की कहानी प्रशासन नियंत्रण में बताता रहा और वास्तव में स्थिति बिगड़ती रही। प्रशासन द्वारा लोगों को सहायता पहुंचाई जाती है उसकी अपनी एक व्यवस्था है और उसी व्यवस्था के तहत काम करने पर सरकार से समाज के बीच सामग्री पहुंचने में एक माह तक का समय लग जाता है और उस तक पीड़ित मौत की नींद भी सो चुका होता है।

दर असल सरकार की तय नीति के अनुसार यदि किसी गरीब का मकान अतिवृष्टि से पूरा गिर जाये तो उसे एक हजार रुपये और आंशिक गिरे तो पांच सौ रुपये की सहायता उपलब्ध करवाई जाती है। यह राशि भी उस समय दी जाती है जब पटवारी रिपोर्ट तैयार करके तहसीलदार को और तहसीलदार कलैक्टर को दे दे व उन्हें पूरी सन्तुष्टि हो जाये। तब तक पीड़ित की पीड़ा अधिक बढ़ चुकी होती है।

एक बार समाज और प्रशासन को इस बात पर सोचना होगा कि आखिर प्राकृतिक प्रकोप के कारण होने वाली बर्बादी की जिम्मेदारी किसे दी जाये? कई बार लोग यह भी कहते हैं कि वर्षा, आंधी, तूफान से सरकार का क्या लेना-देना जिसका भी नुकसान हो वह खुद भुगते। पर उन्हीं लोगों से एक सवाल है कि जिसका सब कुछ बर्बाद हो गया, वह अब कैसे अपना घर बसाये। आपस में भाईचारे की भावना पैदा करने के उद्देश्य से ही स्कूलों में बच्चों में रोजाना एक प्रतिज्ञा करवाई जाती है 'भारत मेरा देश है, समस्त भारतीय मेरे भाई बहिन है'। जब बच्चों में ही प्रेम की भावना डालना हमारा उद्देश्य है तो फिर प्राकृतिक आपदा के समय मदद क्यों नहीं?

सरकारी व्यवस्था पर लोग भी अधिक भरोसा नहीं करते हैं। आम आदमी आज भी आभारी है उन समाज सेवी संस्थाओं, और व्यक्तियों का जिन्होंने दिन-रात एक जुट होकर सरकार से साधन कम होने के बावजूद भी मदद की। जब मदद पूरी हुई तो जन जागरण का एक अभियान चलाया जिससे जनता भी जागी और सरकार भी।

इस पुस्तक को बाढ़ की तबाही से अनभिज्ञ लोगों को सच्चाई बताने, मदद के लिये कौन लोग आगे आये और फिर बाढ़ को रोकने के किस तरह प्रयास शुरू किये गये, यह सब बताने के लिये तैयार किया गया है। वर्षा नजदीक है, समय काफी कम है इस कारण इसमें बहुत अधिक जानकारियों का समावेश नहीं किया जा सका परंतु फिर भी इस तरह का प्रयास किया गया है कि लोग बाढ़ से बचाव की तरफ कदम उठावें। इसे बाढ़ पीड़ित जनता की आवाज के रूप में मानकर प्रशासन को भी इसके प्रति गंभीर होना चाहिये। ताकि भविष्य में इन जिलों को बाढ़ राहत के लिए मोहताज नहीं होना पड़े।

✤ राजेश रवि-जिनेश जैन

परिचय

अलवर

देश की राजधानी दिल्ली और राजस्थान की राजधानी जयपुर में बीच में बसा अलवर जहां विकास के क्षेत्र में किसी से पीछे नहीं है वहीं पर्यटन,कला व संस्कृति में भी देश में अपना स्थान रखता है। जयपुर दिल्ली राष्टीय राजमार्ग संख्या आठ के मध्य से शुरू होने वाले इस जिले का ऐतिहासिक परिवेश भी गौरवपूर्ण रहा है।

पौराणिक दृष्टि से अलवर जिला अपने प्राचीनतम संदर्भों में महा पराक्रमी राजा हरिण्याक्ष, हिरण्यकश्यिप प्रहलाद, सूर्यवंशी राजा वृद्धाश्व व अंबरीष, चन्द्रवंशी राजा उपरिचर और उनके वंशजो से जोडा जाता रहा है। महाभारत काल के बारे में कहा जाता है कि उस समय अलवर उलूक तथा तिजारा क्षेत्र त्रिगतराज सुशर्मा के आधिपत्य में था।

राजगढ़ के समीप माचेडी कस्बें में मत्स्यपुरी के नाम से राजा मटिसल की राजधानी होने का उल्लेख मिलता है। मटिसल के दूसरे पुत्र वनसैन के पुत्र को विराट भी कहा गया है जिसके यहाँ पांडवों ने अपना एक वर्ष का अज्ञातवास बिताया था, आज के अलवर का विस्तार तिजारा से विराट नगर के मध्य है राजोरगढ में प्राप्त शिलालेख से प्रमाणित होता है कि 9-10 वीं शताब्दी में अलवर जिले का दक्षिण भाग गुर्जर प्रतिहार राज्य में सम्मिलित था। उसके बाद चौहान शासक बीसलदेव के संक्षिप्त शासन के बाद इस क्षेत्र में क्षत्रियों का शासन रहा। निकुंभ क्षत्रियों के बाद इस क्षेत्र में खानजादों का शासन स्थापित हुआ अलावलखां खान जादे ने निकुम्भ क्षत्रियों से यह भू-भाग छीनकर संवत 1549 में अलवर दुर्ग का परकोटा बनवाया।

अलावलखां का पुत्र हंसन खाँ मेवाती अलवर का एक प्रसिद्ध एतिहासिक व्यक्तित्व था जिसने पानीपत की पहली लडाई में इब्राहिम लोदी की ओर से तथा उसके बाद चित्तौड के राणा सांगा के और से मुगल आक्रांता बाबर से

भरतपुर

देश की राजधानी दिल्ली और राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग समान दूरी 178 किलामीटर और राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 आगरा-जयपुर के बीच बसा शहर भरतपुर है।

भरतपुर शहर को बसाने का कार्य महाराजा सूरज मल ने 1732 में शुरू किया जो 1737 तक पूरा हुआ। पहले शहर का परकोटा बनाया गया जिसकी चौडाई 200 से 250 फीट तथा तीस फीट गहरी खाई थी परकोटे की ऊँचाई धरातल से 60 फीट थी। परकोटे पर चालीस बुर्ज थे तथा इससे बाहर जाने के दस रास्ते थे। इस शहर का नाम त्याग और तप की प्रतिमा भरत के नाम से भरतपुर रखा गया।

भरतपुर में गढ़ तथा उसकी शत्रु और बाढ़ बचाव हेतु शहर के चारो और परकोटा मिट्टी का बन गया फिर भी समस्या उस समय तीन नदियों की गम्भीर, बाणगंगा तथा रूपारेल के पानी जो संगम स्थल था जिसको नियंत्रण हेतु उपाय का आया तब महाराजा सूरजमल जी ने शहर से पाँच किमी. से आठ किमी. दूरी पर दक्षिणी में अतान तट बंध सेवर तटबंध उत्तर पच्छिम में शहर से दो किमी. की दूरी पर मोतीझील तट वंध मारजीनल बांध बनायें जो तीनों नदियां के पानी का भण्डार रखते थे। शहर और उसके आस पास के क्षेत्रों की पेयजल की समस्या का एक साधन बना। पानी रूके रहने से भूमिगत पानी के स्तर में बढ़ावा तो मिलता ही था तथा पानी मीठा रखने में भी सहायक रहता है। समय पर शत्रु से खतरा उत्पन्न होने पर बांध तोडकर फैला दिया जाता था। जिससे शत्रु गढ़ की ओर प्रवेश न करे। काश्तकारों की भूमि खाली तो हो जाती थी उस पर बम्पर फसल होती है। महाराज सूरजमल के उपरान्त कई बार बांध टूटा जिसकी तुरन्त मरम्मत महाराजा जवाहरसिंह ने अपने समय कराई। बाढ़ आने पर बाईपास से पानी निकलता

जमकर लोहा लिया और खानवा के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। बाबर द्वारा यह क्षेत्र अपने पुत्र हिंदाल को और बाद में हुमांयु द्वारा अपने सेना-नायक तुदीवेग को दिया गया । हसनखां मेंवाती के भतीजे जमालखां की बडी पुत्री से स्वंय हुमायूं ने और छोटी पुत्री से उसके सेनापति बहराम खाँ ने शादी कि जिसकी कोख से हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और अकबर दरबार के नवरत्नों में से एक अब्दुल रहीम खानखाना उर्फ रहीम ने जन्म लिया। अकबर के शासन काल में उसके बहनोई मिर्जा शरफुददीन व औरंगजेब के शासन काल में मिर्जा जयसिंह के अधीन यह क्षेत्र रहा। पतनोन्मुख मुगल साम्राज्य के अंतिम दौर में भरतपुर के जाट राजा सूरजमल और उसके पुत्र जवाहरसिंह के अधीन भी यह क्षेत्र रहा।

मुगलकाल के पराभावकाल की राजनैतिक अस्थिरता के दौर में सन 1775 में राव राज प्रतापसिंह ने अलवर राज्य की स्थापना की उनके परवर्ती शासक महाराजा बख्तावर सिंह महाराजा विनयसिंह, सवाई शिवदानसिंह, सवाई मंगलसिंह, महाराज जयसिंह और तेजसिंह ने राजस्थान निर्माण तक यहां शासन किया।

रियासती शासन के अन्तिम दौर में प्रजातंत्री शासन व्यवस्था के लिए संघर्षरत प्रजा मंडलों के अभियान और स्वाधीनता प्राप्ति के साथ देशव्यापी सांप्रदायिक अशान्ति से उभरकर अंतत: 19 मार्च 1948 को अलवर, भरतपुर, करौली और धौलपुर रियासत को मिलाकर बनाये गये मत्स्य संघ में सम्मिलित हुआ। 22 मार्च 1949 को मत्स्य संघ के वृहद राजस्थान में विलीनीकरण के साथ यह क्षेत्र राजस्थान राज्य के एक जिले के रूप में स्वतंत्र भारत का की एक इकाई बन गया।

यह जिला न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से अपितु भौगोलिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्व रखता है। प्राकृतिक बनावट के आधार पर अलवर को तीन भागों में बांटा जा सकता है- 1. मध्य पर्वतीय भाग 2. पूर्वी पठार और 3. पंश्चिमी रेतीला भाग अरावली पर्वत की श्रेणियों उत्तर पूर्वी कोने से दक्षिण पश्चिम की ओर फैली हुई है। थानागाजी, राजगढ, अलवर और उत्तर पूर्व में किशनगढ़ और तिजारा था और बांध सुरक्षित रहते थे। उसके उपरान्त भूतपूर्व शासको ने भी बांधों के मरम्मत रख रखाव पर काफी ध्यान दिया। महाराजा किशनसिंह और बृजेन्द्रसिंह अपनी रियासत के बांधों को स्वंय देखते थे, जैसे कोई अपने मकान को देखता है। उसी अनुसार उनकी मरम्मत रख रखाव और समय समय पर परिवर्तनीय सुधार (मोडीफिकेशन) भी किये गये और किये जा रहे है।

भरतपुर रियासत की अर्थ व्यवस्था को सुधारने और बढोतरी का एक उस समय एक ही स्त्रोत था वह थी कृषि। इस कारण महाराजा बलवंतसिंह के समय 1826 से 1853 ने इस और ध्यान दिया और अपने काल में तीनों नदियों के पानी कि एक एक बूंद का उपयोग हेतु रियासत में जगह जगह बांधों का निर्माण कराना प्रारम्भ करवाया जो आज भी कायम है।

भरतपुर के पूर्व शासकों ने जो ध्यान अपनी रियासत की जनता की और बढ़ाने खजाने की आय की वृद्धि हेतु जो सिंचाई पद्धति अपनाई वह एक मात्र और अनूठा प्रणाली है जो संसार प्रसिद्ध 'जल प्लावन सिचाई योजना ' के नाम से जानी जाती है। कहते है कि चीन देश का एक भ्रमण मण्डल भरतपुर आया तो उसने इस प्रणाली को देखा और बहुत प्रभावित हुए। अपने देश में चर्चा की और इस प्रणाली को अपनाया और अपने देश में जहां यह योजना बनाई इसका नाम संस्कार भी 'भरतपुर जल पलावन सिचाई योजना ' रखी है। इसी प्रकार जब इजराइल देश का प्रतिनिधि मण्डल भ्रमण पर आया तो इस पद्धति पर आधारित प्रणाली विकसित कर रहा है। बाद में अन्य पडौसी रियासतों ने भी अपनाई जिससे उनकी अर्थ व्यवस्था पर असर होते हुए जनता को भी लाभ मिला।

इस विचित्र प्रणाली का आधार यह सिद्धान्त रहा है कि उपलब्ध पानी की एक एक बूँद का अधिक से अधिक भू-भाग में फैलाया जाये। जिससे रबी की फसल अच्छी होने के साथ साथ भूमिगत पानी का स्तर ऊंचा हो और कायम रहे। चार्ज हेतु पानी के फैलाव और उसके साथ साथ नियमित बहाव से जिले की भूमि का क्षारीय पानी जहां जहां दीमक लगती थी उसकों मिटाने में सहायक है,

अलवर
भरतपुर

तहसीलों में इसकी शाखाएं फैली हुई है। पूर्वी पठार दक्षिणी पठार का ही एक भाग है। जिसकी ढ़ाल पूर्व की ओर है इसमें प्रमुखतया लक्ष्मणगढ़ और रामगढ़ तहसीले आती है। पश्चिमी रेतीले भाग में बहरोड, बानसूर, और मुण्ड़ावर तहसीलों का पश्चिमी भाग है।

जिले का जलवायु शुष्क एवं स्वास्थ्यप्रद है। गर्मियों में यहां भीषण गर्मी और सर्दियों में तेज सर्दी पडती है जिले का उच्चतम तापमान 47 से. ग्रे एवं न्यूनतम तापमान जमाव बिन्दू तक पहुँच जाता हैं। यहां का औसत तापमान 26 से ग्रे. और औषत वर्षा 61.16 सेमी है किन्तु वर्ष 1987 मे औषत वर्षा मात्र 30.48 सेमी. रही।

जिले में यों तो अनेक बरसाती नदियां है किन्तु इनमें से साबी, बाणगंगा और रूपारेल नदियां प्रमुख है। जिले में अनेक छोटी-बडी झील और बांध बने हुए है। इनमें जयसमन्द, सीलीसेढ, मंगलसर, मानसरोवर, आगर, जैतपुर, हंस सरोवर,देवली ट्रेनिंग बांध रामपुर, [illegible]समन्द, जयसागर, हरसोरा बघेरी खुर्द ओर विजयसागर आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

जिले की तीन प्रमुख नदियों रूपारेल, साबी और बाणगंगा को आधार से अध्ययन करे और इस अध्ययन को वर्ष 1996 की बाढ पर ही केन्द्रित करे तो एक बात साफ निकल कर आती है कि जहां जंगल साफ हुए है। वहीं पर बाढ ने अपना विकराल रूप धारण किया है।

रूपारेल नदी के दो नालों चूहडसिद्ध और लण्डुआ नाला ने सबसे अधिक प्रलय मचाया। इन क्षेत्रों में ही जंगल साफ हो चुका है साबी नदी के पानी से गंभीर बाढ़ नहीं आई वर्ष 1996 में बीबी रानी,कोटकासिम व सोडाबास में इसका पानी अवश्य आया परंतु ये सभी साबी के जलग्रहण क्षेत्र भी है। इसका फ्लो जमीन के भीतर अधिक है।

तीसरी बाण गंगा नदी है जो जयपुर की सीमा से शुरू होती है। इसकी सहायक नदी अरवटी है जो भावंता से शुरू होती है व प्रतापगढ़ में पास सैंथल सागर में जाती है देवरी की स्टीम मंगलासंर बांध पर जहाजवाली नदी पर समाप्त होती है इनमें महत्वपूर्ण बात यह है कि तीन नदियों का जल ग्रहण क्षेत्र सरिस्का को अवश्य छूता है। ●

इस कारण जिले की पानी की क्षमता में बढ़ोतरी होती रहे कड़वी व खारे भूमिगत पानी को मीठा किया जाता रहे, भूमि की खार सतह दीमक तथा अब रासायनिक खाद जो डाला जा रहा है उससे खेतो की पैदावार क्षमता खराब न हो फलश बाढ़ के पानी से हाने पर मददगार है। इस जल प्लावन सिंचाई योजना से जो पानी में जहरीले लवणों से घुलन पानी है और पीने से असाध्य बीमारियों का शिकार जनता पशु-पक्षी को होना पडता है। उसकों दूर करने में सहायक हैं

मुगलकाल में इस क्षेत्र के निवासियों ने जो दुःख सहे है उसका इतिहास साक्षी है, जिनके पापाचारे, अत्याचारों के खिलाफ आवाज बुलन्द की थी वह यह ही क्षेत्र है। जिसने उनकी ललकारा और शिकस्त दी इस कारण जब यह क्षेत्र यमुना पानी के कमान्ड क्षेत्र में है उस समय के मुगल काल के शासकों ने इस क्षेत्र को यमुना नदी के पानी से वंचित रखा जबकि शाहजहां के काल में ही यमुना के पानी का उपयोग के लिए पा[illegible] द्वारा अली मोहम्मद खान ने ताजे वाला हैड वर्क्स का निर्माण एवं पश्चिम और पूर्वी नहरों का निर्माण करा दिया था।

इस तरह अंग्रेजो से लगातार संघर्ष छब्बीस बार भरतपुर के गढ की फतह लार्ड लेक न कर पाया और संधि हुई तो उनके शासनकाल में भी यमुना का पानी इस क्षेत्र को न देना एक कारण रहा। तब व मुश्किल वर्ष 1905 व 1909 में महाराजा किशनसिंह। 1900-1923 ने आगरा कैनाल से डीग तथा हथिना एस्के द्वारा क्रमशः 40-60 क्यूसेक्स पानी लेने का करार किया था वह भी पेयजल समस्या डीग के तालाबों के समय समय पर भरने का था न कि सिचाई हेतु

जब ऐसी स्थिति में भरतपुर रियासत की मुगलों और अंग्रेजा शासकों ने यमुना नदी के पानी से वंचित रखा तब रियासत ने अटठारहवीं शताब्दी में भरतपुर की चारो नदियां रूपारेल, बाण गंगा, गम्भीर तथा कुकुन्द के पानी का उपयोग हेतु जो मात्र वर्ष के तीन माह वर्षा ऋतु में बहकर आता है तब अलवर, जयपुर और करौली रियासतों से संधिया कर इस विचित्र एव अनूठी सरल सिचांई पद्धति विकसित की। ●

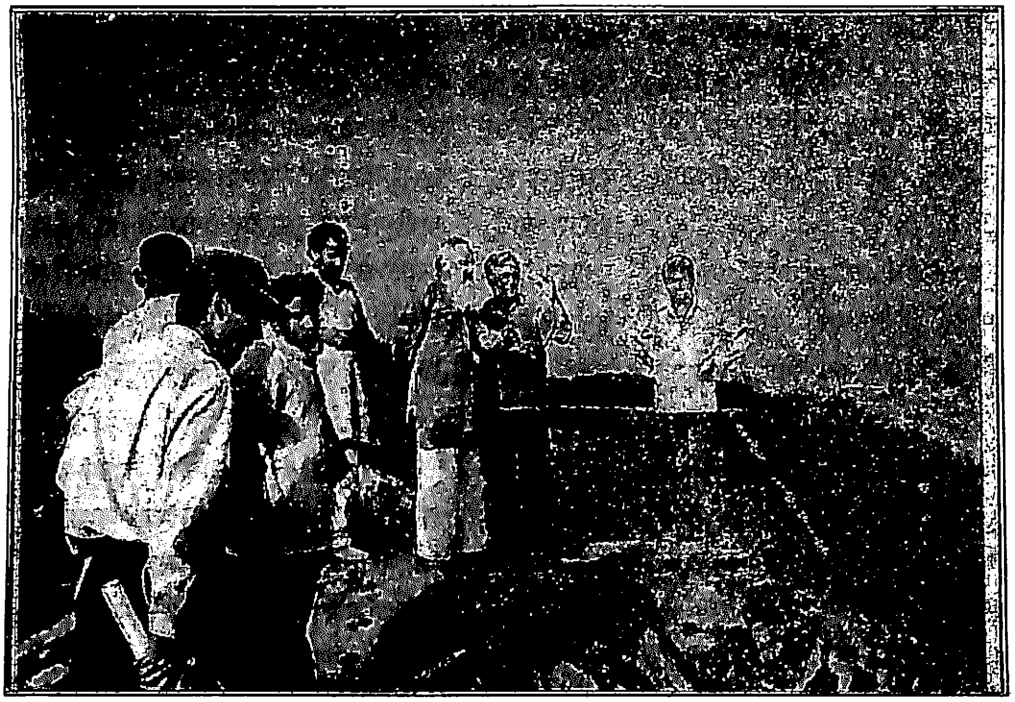

सूखा बाढ़ मुक्ति

राजेन्द्र सिंह

सूखा एवं बाढ़ इस समय हर जगह की कहानी बनती जा रही है। इसके कारणों पर चर्चा यह है कि प्रकृति में मानवीय भोगवादी इच्छाओं की पूर्ति की क्षमता नहीं है। बढ़ती भोगवादी जरूरत प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रही है। इससे प्रकृति की उत्पादक क्षमता सतत् घटती जा रही है, जबकि प्रकृति का शोषण बढ़ता जा रहा है। प्रकृति की हालत प्रसूति महिला जैसी नाजुक है, जबकि इस पर लूट के झटके बढ़ते जा रहे हैं। इसलिए कभी बादल फटकर अतिवृष्टि हो जाती है या फिर वर्षों सूखा पड़ा रहता है। वैसे ऐसा पहले भी घटता था लेकिन तब मानव समाज संगठित व मर्यादित था। इसलिए अतिवृष्टि में गोवर्धन संगठित व मर्यादित था। इसलिए अतिवृष्टि में गोवर्धन पर्वत को मिलकर ऊपर उठा लेते थे या उस पर जाकर बस जाते थे। नीचे के क्षेत्र जल के लिए छोड़ दिये जाते थे। सूखा पड़ने पर लोग पलायन करके दूसरी जगह चले जाते थे। लेकिन अब ऐसा संभव नहीं है क्योंकि अब गोवर्धन पर्वत नंगे व अनउत्पादक हैं। दूसरी जगह पलायन करने के लिए बची नहीं, जहां जाकर गुजर बसर की जा सके। अब तो घुमन्तु समाज को भी कहीं भी एक रात गुजारनी मुश्किल होती है। फिर सूखा या बाढ़ प्रभावितों को घर छोड़कर जाने पर क्या बीतती है, इसकी कल्पना करें।

एक समय था जब लोग बाहर से आये किसी भी व्यक्ति को अतिथि मानकर उसका स्वागत होता था। अब तो कोई अपने दरवाजे पर किसी को खड़ा देखकर बाहर से बाहर टालने की कोशिश करता है, ऐसी प्रवृत्ति बनती जा रही है। इसका अर्थ यह है कि लोग दूसरे को अपना साझीदार नहीं बनाना चाहते हैं। सूखा या बाढ़ की परिस्थिति सबकी साझी परिस्थितियां हैं। इसका साझा ही इलाज किया जा सकता है। हमें इन बिगड़ते हालातों के कारणों को मिलकर समझना होगा। साथ ही साथ समझकर उपाय करने होंगे।

सूखा-बाढ़ की समझ बढ़ाने हेतु हर स्तर पर संवाद शुरू करना। यह संवाद पद यात्राओं, शिविर, सम्मेलन, संगोष्ठी, पत्र-पत्रिकाओं द्वारा किया जा सकता है। इस संवाद में से इसकी मुक्ति के उपाय खोजने होंगे। उपाय मालूम होने पर सबको प्रत्यक्ष काम में लगना होगा। यह काम वृक्षारोपण, मेड़बन्दी, चारागाह विकास, चैक डैम, नालाबन्डिंग, जोहड़ निर्माण का काम हो या टूटी ड्रेन। डैम की मरम्मत करने का हो। जब तक इस काम में सब मिलकर नहीं लगेंगे, तब तक बाढ़ या सूखा मुक्ति का काम आगे नहीं बढ़ेगा। हम सबको पूर्ण संवेदनाओं के साथ इस कार्य में जुटना ही पड़ेगा।

इसकी पहल तो डॉ. जी.डी. अग्रवाल ने अपने अध्ययन से कर दी है। उनके अध्ययन से यह बात मुख्य रूप से उभर कर सामने आई है कि हमारे विकास के नाम पर अनियोजित, विखण्डित, गतिविधियां जैसे रेल की पटरियां, उंची सड़कों से पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध नहीं होने से तथा नदियों के प्रकृति प्रवाह को बड़े-बड़े बांधों के रोकने के कारण बाढ़ आती है। उन्होंने अपने अध्ययन में स्पष्ट तौर से उल्लेख किया है कि नदियों नालों के प्रवाह को बिल्कुल समाप्त करने के कारण बाढ़ आती है। नदी-नालों का प्रवाह पूर्णतः कभी नहीं रोकना चाहिये। कम से कम 25 फीसदी जल प्रवाह तो होना ही चाहिये। ऐसा करने से नदियों नालों का प्राकृतिक स्वरूप बना रहता है। इसे बनाये रखना अत्यन्त जरूरी है। यदि नदी-नालों में जल नहीं बहेगा तो लोग उसमें खेती करने लगेंगे। ऐसा हुआ भी है। 1995-96 की वर्षा में जो नयी नदियां, नाले बने हैं, ये सब पहले, पुराने नदी-नाले थे। अतरिया का बांध टूटने से जगह-जगह नदियां-बड़े नालों की स्थिति बन गई। ये सब पहले छोटे-छोटे नाले थे। इनके सहज प्रवाह को बन्धे, सड़क व रेलवे लाइन ने प्रभावित किया है। इसी कारण छोटे नालों ने विनाश लीला रची है। इससे मुक्ति हेतु भविष्य में हम नालों के प्रवाह को नहीं रोकें।

सूखा-बाढ़ की समझ बढ़ाने हेतु हर स्तर पर संवाद शुरू करना। यह संवाद पद यात्राओं, शिविर, सम्मेलन, संगोष्ठी, पत्र-पत्रिकाओं द्वारा किया जा सकता है। इस संवाद में से इसकी मुक्ति के उपाय खोजने होंगे। उपाय मालूम होने पर सबको प्रत्यक्ष काम में लगना होगा। यह काम वृक्षारोपण, मेड़बन्दी, चारागाह विकास, चैक डैम, नालाबन्डिंग, जोहड़ निर्माण का काम हो या टूटी ड्रेन।

वर्षा जल को रोकने हेतु जल संरक्षण संरचना छोटी-छोटी बनाये। ये भी शत-प्रतिशत जल को नहीं रोकें, ऐसी बनाई जाएगी तो ही सूखे एवं बाढ़ से मुक्ति मिलेगी। थानागाजी के बहुत सारे गांवों ने अपने क्षेत्र को सूखे से मुक्त करने के लिए जोहड़-बांध आदि बनाये। लेकिन इनमें पूरा जल नहीं रोका। कुछ जल अपने पहले रास्ते से बहने दिया। यह क्षेत्र अब सूखा एवं बाढ़ से मुक्त हो गया है। इतना ही नहीं अब इस क्षेत्र की सूखी नदी वर्ष भर बहने लगी हैं। इससे यह क्षेत्र उत्पादक बनता जा रहा है। उक्त छोटे-छोटे उदाहरणों से हम रास्ता देख सकते हैं।

अलवर जिले की रूपारेल व साबी में आकर मिलने वाले नालों के जल का उपयुक्त प्रबन्ध करने हेतु अभी बहुत काम करने की जरूरत है। इन पर काम हो जाये तो ये सब नाले सदा-बहार बन जायेंगे। यहां के पहाड़ों की बनावट इतनी अनुकूल है कि जो जल लेती है उसे झरनों के रूप में वापस निकाल देती है। जब यहां बहुत जंगल थे तो यहां वर्षा का पानी पहाड़ियों में जाता था। फिर वह सैकड़ों झरनों के रूप में बहता था। जैसे-हरसावल, आलग्वाल, रक्सावला, तालवृक्ष व नलदेश्वर आदि के रूप में ये बहते थे। इनमें से जंगल क्षेत्र के झरने तो आजकल भी बह रहे हैं। जैसे रक्सावाला झरना सूख गया, क्योंकि उस क्षेत्र का जंगल नष्ट हो गया। झरनों का जंगल के साथ सीधा सम्बन्ध है। जल जहां बरसा, वहां पर जंगलों की रूकावट के सहारे सीधा जमीन में चला जाये या फिर छोटे जोहड़ बांधों में कुछ ठहरकर भूमिगत होता रहे, कुछ भूमि के ऊपर के पुराने रास्तों पर बहता रहे तो फिर बाढ़ की संभावनाएं कम हो जाती है।

रूपारेल, चूहड़सिद्ध, लण्डूरा नाला के जलग्रहण क्षेत्रों को देखने से स्पष्ट समझ में आता है कि जितने क्षेत्रों में जंगल था, उतने में बाढ़ नहीं आयी। अर्थात जंगल ने वर्षा जल को नियंत्रित कर दिया। जहां कहीं जोहड़-बांधों ने बहते पानी का कुछ हिस्सा अपने में समा लिया। फिर धीरे-धीरे देता रहे। वहां भी बाढ़ या सूखे का प्रभाव नहीं हुआ, बल्कि समृद्धि बनी रहती है। जल समृद्धि बनी रहती है। जल समृद्धि का प्रतीक है। इसका ठीक से प्रबन्ध कर दिया जाये तो सब प्रकार से समृद्धि बनी रहेगी।

अलवर-भरतपुर में समृद्धि बनाये रखने के लिए जन चेतना के साथ जन संगठन बनाने का प्रयास जरूरी है। इसके लिए बाढ़ मुक्ति यात्रा शुरू की गई। इस यात्रा का सार हमने यहां पेश किया है। इस कार्य में हमें अलवर के पत्रकार राजेश रवि एवं जिनेश जैन का सहयोग हासिल हुआ, उनके हम तहदिल से आभारी हैं। ●

तन ढकने को कपड़े नहीं बचे

अलवर जिले में 22 से 30 जून 1996 के बीच हुई अतिवृष्टि से कोटकासिम उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी ग्रामीण क्षेत्रों में बाढ़ का बहुत अधिक प्रभाव हुआ। इस वर्ष अलवर में 22 से 30 जून के मध्य गत वर्षों की अपेक्षा सामान्य से 240 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई। इस भयंकर वर्षा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता 24 घन्टे में 380 एम एम वर्षा का होना अर्थात बहुत कम समय में बहुत अधिक वर्षा का होना है।

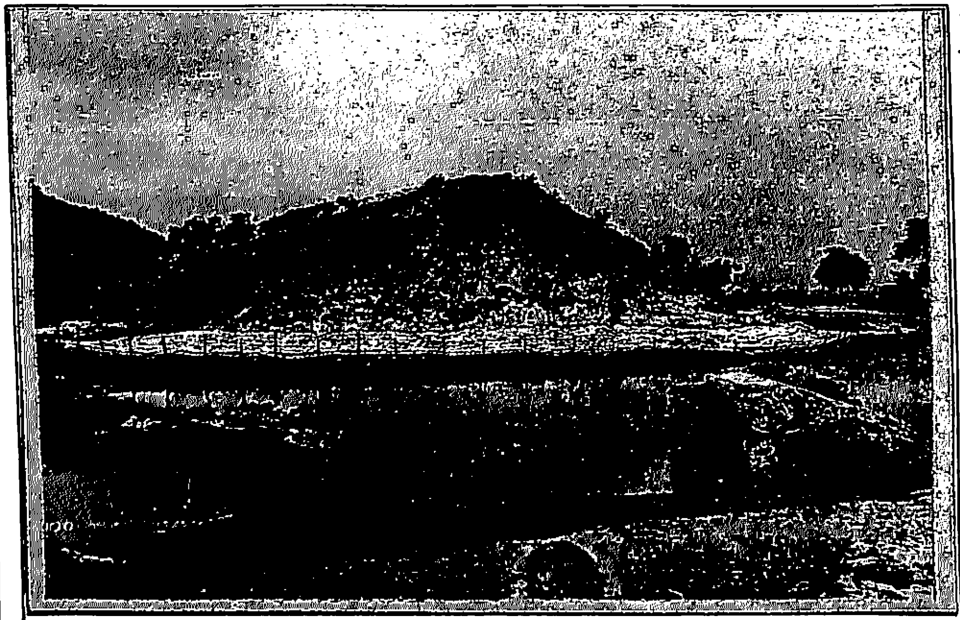

करीब पांच करोड़ लागत की खानपुर सिंचाई परियोजना बाढ़ में बह गई।

इस प्रकार की वर्षा को अतिवृष्टि का नाम ही दिया जाता है। ऐसी वर्षा में, पानी को जमीन में सोखने हेतु बहुत कम समय मिलता है, अतः वर्षा का जल तेज बहाव के साथ मिट्टी का बहुत अधिक कटान करता हुआ, चारों तरफ विनाश लीला फैलाकर प्रलयंकारी बाढ़ बदल गया। जो इस वर्ष राजस्थान के अनेक हिस्सों में भी मानसून के आरम्भिक दिनों में देखने को मिली। कोटकासिम में अतिवृष्टि ही बाढ़ का मुख्य कारण नहीं है। मुख्य कारण यह भी है कि इस इलाके के 5 सरकारी बांध बंबोरा, जिंदोली, भगेरी, खानपुर व बीदाका पहले से ही क्षतिग्रस्त थे जो पहली वर्षा में ही टूट गये। तरुण भारत संघ द्वारा गठित बाढ़ सहायता समिति व बाढ़ राहत टीम ने इस क्षेत्र में अपने कार्य के समय जो सच्चाई समझी और देखी, वह इस प्रकार है:-

इस क्षेत्र में बनाई गई सड़कें जगह-जगह से टूट गई हैं। कितनी ही जगहों पर सड़कों के दोनों किनारे बहुत दूर-दूर तक कट चुके हैं। अन्य कई स्थानों पर वर्षा के जल ने सड़कों को कई सौ मीटर तक तोड़कर यातायात को अवरुद्ध कर दिया है। यद्यपि कुछ निचले क्षेत्रों को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रों में से वर्षा का जल निकल चुका है। तथापि अब भी अनेक गांव में पानी भरा हुआ है। इस कारण इन गांवों में आने जाने के रास्ते अभी भी नहीं खुल पाये हैं। गांव कनहारका के श्री निवास शर्मा बताते हैं कि इस भयंकर वर्षा से बाढ़ के कारण खेतों गांव व सड़कों पर 5-7 फुट तक पानी भर गया था जिसके कारण जन, धन, पशु, वृक्ष और खेतों में भयंकर नुकसान हुआ है। इस प्राकृतिक प्रकोप से जहां एक और अनेक बांध, जोहड़ व खेतों की मेढबन्दियां टूट गयी वहीं दूसरी तरफ फसलों को भी बहुत अधिक हानि हुई। कोटकासिम के अधिकांश हिस्सों में फसल पूर्णतया नष्ट हो गयी।

कोटकासिम से आगे 20 किलो मीटर उत्तर बीबीरानी गांव से आगे नुकसान नजर आता है। अधिकतर गांव में गरीब वर्गों द्वारा बनाये गये कच्चे मकान, जहां इस प्राकृतिक प्रकोप से नष्ट हो गये हैं वहीं उनके मकानों में दरारे पड़ गई हैं। सामाज, प्रयोग में आने वाले कपड़े एवं पशु चारा व जलाने की लकड़ी सभी कुछ वर्षा जल ने बर्बाद कर दिया

है। कोटकसिम के जिन गांव में अतिवृष्टि का भयंकर प्रकोप हुआ है। उनमें कुछ बीबीरानी, पुर, निमलाको, जालाको, धीकाका, चौकी, दाईको, शेरपुर, श्यालोदा, सालकर, मिर्जापुर, गुडरायपुर, झाडका, भंगेरी खुर्द, भगेरी कला, जमालपुर, गांगापुरी, (कुनपुर, हरसोली, धीमरो की ढाणी, कनहारका, कतोपुर, जोखास व दाईका खुर्द आदि प्रमुख है।

इन गांवों में से कई गांवों दाईका, शेरपुर जमालपुर, आदि में कई माह तक गांव में जाने का रास्ता नहीं खुल पाया। क्योंकि अभी तक गांव के चारों तरफ पानी भरा हुआ रहा है। वहां लोगों की स्थिति बहुत अधिक शोचनीय व दयनीय रही। शुरू में न तो सरकार और न ही कोई स्वयं सेवी संगठन इन लोगो तक किसी भी प्रकार की राहत व सहायता सामग्री पहुंचाने मे सफल हो पाये।

अब छत ही सहारा बनी

बाढ़ पीड़ित अधिकतर गांव में 5 से 20 तक परिवारों के मकान नष्ट हो गये हैं। इन गांवों में जहां पशुओं के चारे की भारी समस्या है, वहीं मनुष्यों के लिए भोजन, वस्त्र, ईंधन व कुछ लोगों की मकानों की भी समस्या है। अनेक गांवों में भयंकर बीमारियों के फैलने की भी आशंका बनी जबकि उल्टी, दस्त, बुखार आदि की समस्या प्रत्येक गांव को रही। तरुण भारत संघ का चिकित्सा दल ही एक मात्र ऐसा दल था जिसने इन क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों का आयुर्वेदिक औषधियों के द्वारा उपचार किया जो आज भी जारी है और ग्रामीणों का इस दल के प्रति विश्वास भी बहुत अधिक जमा है। सरकारी डॉक्टर मात्र कुछ गांवों में ही जाते हैं गांव वाले सरकारी दवा पर अधिक भरोसा नहीं कर रहे हैं उनका कहना है कि यह दवा इलाज कम करती है और वे कभी कभी पैसे भी लेते हैं। जैसा कि चौकी गांव के श्री धूपलाल वृद्ध से सरकारी डॉक्टर ने दस्तों की दवाई देने के लिए पन्द्रह रुपये ले लिए।

गांवों में सरकारी सहायता में पक्षपात का भी आरोप लगाया गया। कुओं व नलों में कीटाणु नाशक दवाईयों का प्रयोग बहुत कम गांवों में सरकार द्वारा किया गया है। धीमरो की ढाणी जैसे कई गांव जो नदी के किनारों पर बसे हुए हैं उन्हें तहसीलदार आदि सरकारी ऑफिसर वहां से उठाकर अन्य स्थान पर भगाने हेतु प्रयत्नशील है। तरुण भारत संघ द्वारा गत वर्ष बांटी गई टीन की चद्दरों का अधिकांश गांवों में सदुपयोग हो रहा है। परन्तु इसके कुछ अपवाद भी हे। यथा-धीमरों की ढाणी में रहने वाले कुडिया आदि ने टीन की चद्दरे किसी को बेच दी। ●

❑ डॉ. मैनपाल सिंह

पूरा गांव ही बह गया

तरूण भारत संघ का चिकित्सा दल एक जुलाई 1996 को रामगढ़ क्षेत्र के बांधोली गांव में पहुंचा तो वहां स्थित लालदासबाबा के मंदिर में बांधोली का बास के लोग शरण लिए हुए थे। उनकी स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए पहले यह दल उनके गांव पहुंचा और देखा कि पूरा गांव ही बह गया था। मात्र एक घर पक्का शेष था। खेती पूरी तरह नष्ट हो गयी। खेतों में 4 से 5 फुट ऊंची रेत जम गई थी। गांव ऐसा लग रहा था जैसे किसी अत्यन्त बड़ी नदी के बीच का स्थान हो। गुरुद्वारा की केवल नींव दिखाई दे रही थी। एक बिल्कुल नया पक्का मकान जिसमें अभी लोगों ने रहना शुरू ही नहीं किया था, पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। जो कच्चे मकान गिरे थे, उनके सभी लोग इसी में शरण लिये हुऐ थे। कुछ लोग अपने-अपने घरों में 4 से 5 फुट पानी के अन्दर खड़े थे। बच्चों को अपने-अपने कन्धों पर बैठाये थे। बक्से, बरतन, कपड़ें आदि सब बह गये थे। करीब 20 लोग एक नीम के पेड को पकड़कर खड़े थे जब वह भी गिरा तो भी उसी को पकड़े खड़े रहे, जिससे बच्चे बहने से बच सके। किसी प्रकार भूखे प्यासे रहकर 48 से लेकर 72 घन्टे तक जीवन मृत्यु से संघर्ष कर ये लोग ग्राम बांधोली पहुचें। लोगों के पास शरीर पर एक जोड़ी कपड़े बचे थे। जो अनाज उन्होंने साल भर के लिए एकत्रित किया था, वह बह गया था, और कुछ सड़ गया था। प्रकृति की इस विनाश लीला को देखकर बरबस ही आंखों से आंसू आ जाते हैं। महिलाएं और लड़कियों की स्थिति यह हो गई कि वे उन्हीं कपड़ों को पहनकर नहाती थी तथा धूप में खड़े होकर उन्हीं कपड़ों को सुखाती थी। अपने पेट भरने के इंतजाम करने की अथक कोशिश करती है। कुछ बच्चे अपनी सूनी आंखों से अपने जन्म स्थान को देख रहे थे। एक छह वर्षीय बालक हैप्पी अपने घर के मलबे में अपने खिलौने ढूढ़ने की कोशिश कर रहा था। एक घर के मलवें में तीन बोरी गेहूं रखे थे, जिसमें फफूंदी लगकर वह सड़ गया था। लोगों के पास खाने के लिये अन्न, तन ढकने को वस्त्र, बच्चों को दूध, जलाने को ईंधन तक नहीं बचा ऐसे में बीमारियों ने उन्हें बिल्कुल तोड़ डाला था। बांधोली गांव के व कुछ अन्य लोगों ने आटा, सब्जी आदि 3 दिन वितरित की। उसके बाद भी कुछ लोग आटा सब्जी दे जाते जिससे उनका गुजारा हो जाता।

तरुण भारत संघ के चिकित्सक दल ने उन्हें हर रोग की दवा उपलब्ध कराई। इससे 1018 रोगियों को औषधि नि:शुल्क वितरित की गई। अभी भी चिकित्सा दल एवं बाढ़ राहत कमेटी वहां अपना काम कर रही है। महिलाएं यहां खेती के काम में पूरा सहयोग देती हैं। वे खेत की निराई, गुडाई, कटाई, पशुओं के लिए चारा, पानी भरना, भोजना पकाना, बच्चों तथा पशुओं की देखभाल, ये सारा काम करती हैं। बाढ़ के आने से खेती नष्ट हो गई। पशुओं का चारा नष्ट हो गया। ईंधन कुछ गीला हो गया तथा कुद बह गया। पीने के पानी के कुए खराब हो गये। वहां पर महिलाओं से बातचीत करने तथा देखने से जो स्थिति सामने आई, वह कुछ इस

प्रकार हैं:-

1. पीने के पानी के लिए महिलाओं को पौने दो कि.मी. दूर जाना पड़ता है। इस प्रकार दिन भर में लगभग 10 कि.मी. दूरी पीने के पानी के लिए ही चलना पड़ता है। पानी इकठा करने के लिए अधिकांश के पास कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी। दिन भर की जल पूर्तिहेतु कई बार आना जाना पड़ता है। जिस दिन मेहमान आते हैं, उस दिन तो 10 कि.मी. से ज्यादा भी चलना पड़ता है।
2. बच्चे व महिलाएं प्रातः सूखी लकड़ियों की तलाश में दूर जाते हैं तथा उन्हें एकत्रित कर लाते हैं। इससे भोजन यदि उपलब्ध हुआ हो तो बनाया जा सके।
3. जिन महिलाओं के छोटे बच्चें है तथा दूध पीते हैं, वह भी मां को पूर्ण आहार न मिलने के कारण रोते हैं तथा अत्यन्त कमजोर हो गये हैं।
4. जिनके थोड़े बहुत पशु बच गये हैं, उनके चारे की व्यवस्थाएं भी महिलाओं की ही जिम्मेदारी है। दूर जाकर या साथ में पशुओं को ले जाकर आहार न मिलने के कारण उन्होंने या तो दूध देना बन्द कर दिया या अत्यन्त कम देती है।

संस्था की मदद से बाढ़ पीड़ितों के चेहरे खिल उठे।

पुनर्वास के तहत अपने टूटे घर पर चद्दर लगाते हुए बाढ़ पीड़ित

5. महिलाओं की ही जिम्मेदारी होती है कि वे घर की सफाई लिपाई आदि करें। सभी महिलाएं अब मिट्टी फूंस आदि एकत्र कर रही हैं जिससे किसी प्रकार सिर छिपाने लायक घर बनाया जा सके। किन्तु साथ-साथ यह भी घबराहट है कि यदि फिर से पानी आया तो क्या होगा।
6. बच्चों की कापी किताबें, खेलने के खिलोने आदि सभी नष्ट हो गये। वे

बांधोली का बास पूरा बह गया। सिर्फ झंडा नजर आ रहा है, जहां कभी गुरुद्वारा था

कठिन काम है। किसी से कुछ भी पूछने पर लोगों की आंखों में में आंसू आ जाते हैं। गला भर आता है। आज उन्हें वस्त्र, भोजन मकान, पशुचारे की चिन्ता है। उन्हें किसी सुरक्षित स्थान पर स्थापित किये जाने की आवश्यकता है पीने के पानी के लिए व्यवस्था करनी है तथा रोग मुक्त रह सके इसके लिए चिकित्सा व्यवस्था करनी है। जो लगभग 1518 मरीज देखे गये उनमें मुख्यत:, फोडा फुन्सी, पेट के रोग, बुखार, दस्त, उल्टी, कर्ण रोग, जुकाम खांसी आदि सर्वाधिक है। वैसे तो हर प्रकार के रोगी सामने आये, किन्तु सर्वाधिक महिलाओं व बच्चों की हालत खराब है। इसे सुधारने में पूरे समाज को लगना होगा। समाज एक दूसरे के सहारे टिका है। इस पर स्वावलम्बन के आधार को मजबूत करना होगा। ●

❑ वैद्य संजय सिंह

स्कूल नहीं जा पा रहे है। उनका बचपन पूरी तरह नष्ट हो गया है। केवल सूनी निगाहों से अपने घर व गांव को देखते हैं। पानी के भीगने व लगातार एक ही वस्त्र पहनने के कारण बीमार भी हैं। अस्सी फीसदी शरीर पर फोड़े, फुन्सी हो गये हैं तथा बुखार जुखाम आदि पेट के कीड़ें आदि रोगों से ग्रसित है।

7. इस समय जहां शरण लिए हुए हैं वहां भी अब मच्छरों का प्रकोप हो गया है, जिससे उनके स्वास्थ्य को गम्भीर खतरा हो गया है।

पुरुष अब रोजी रोटी की तलाश में इधर-उधर मजदूरी करने को सुबह से ही निकल जाते है। तथा जो कुछ मजदूरी मिलती है, उसी से सामान लाकर रात्रि के खाने की व्यवस्था होती है। गांव की स्थिति एवं उनके दुख का वर्णन करना अत्यन्त

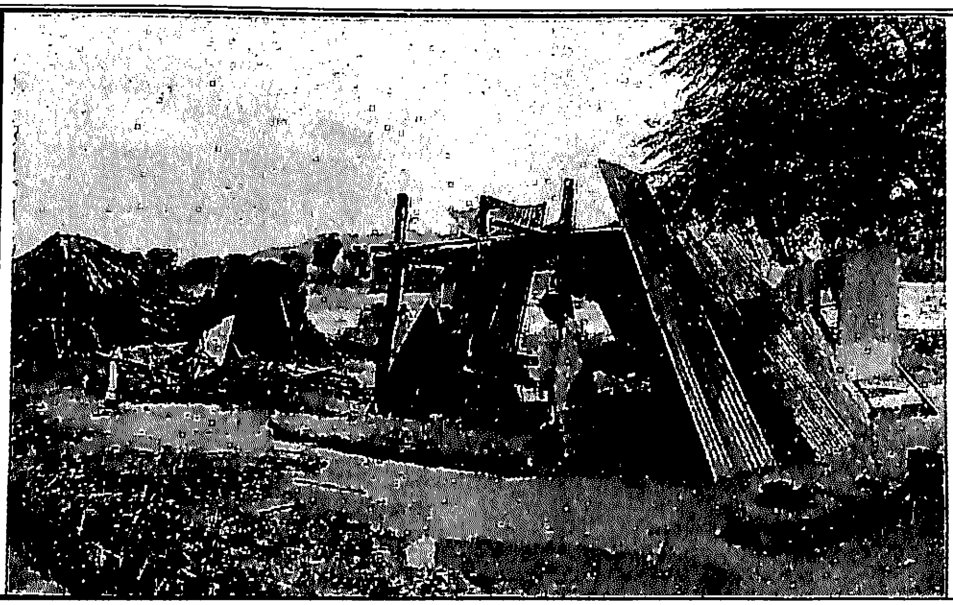

बांधोली का बास में चद्दर देकर तरुण भारत संघ गरीबों का सहारा बना

भयावह स्थिति का सर्वे

तरूण भारत संघ के एक दल ने 13 जुलाई 1996 को महामंत्री राजेन्द्रसिंह के नेतृत्व में बाढ़ क्षेत्रों का सर्वे किया। यह दल रामगढ होता हुआ सुन्हैडा पहुचां, वहां पर कार्यकर्ता जो राहत पीडितो के लिए दवाई वितरित कर रहे थे, वे मिले। दूसरा दल दिल्ली से आये पत्रकार व रामगढ के प्रदान संस्था वाले सभी एक जुट होकर राहत पीडितों का सर्वे करते हुए उनकी मदद में कार्य करने लगे। सम्पतराम सैनी ने बताया कि-हमारा गांव सुनारी नदी से प्रभावित हुआ है। यह बाढ़ दिन के समय 24 जून को आई और लगातार दो वर्षो से आ रही है। लेकिन जितनी भंयकर इस वर्ष जो बाढ़ आई है, उतनी पहले कभी नहीं आई है। बाढ़ में काफी विनाश हुआ है, जैसे टमाटर, कपास, अरहर, तिल्ली, प्याज आदि खरीफ की प्रमुख फसले नष्ट हो गई। पशुओं में गलघोटू की प्रमुख बीमारी बन गई। पशु भी मरने लगे। अतरिया आदि तीनो बांधो का पानी मिलकर आया। अधिकांश कुएँ पानी के बहाव में मिट्‌टी से दब गए, पीने के पानी की भी गम्भीर समस्या बन गई, अब सुनेहडी झील का पानी हमारे कोई उपयोग में नही आता। हमारे गांव के पास एक नहर है, जिसको सरकार ने अभी तक पूरा नहीं कराया। यदि यह पूरी होती तो हमारे लिए पानी की समस्या नहीं होती। सरकार ने कुछ अंश कालीन राहत जरूर दी है कुछ परिवारों को 1,000 रूपये प्रति परिवार भी दिये है। कुछ को 500 रूपये प्रति परिवार दिये है। जो कि न के बराबर है।

सुन्हैड़ा के लोगों के लिए चद्दर ही सहारा बनी।

सड़क पूर्ण रूप से टूट गई है। बेघर लोग अपने खेतों में झोपडी डाले पडे है। आगे सभी दलो ने मिलकर गांव का सर्वे किया जिनमें पाया कि मुख्य रूप से लोगो का खाद्य सामग्री, भूसा एवं मकानों का विनास हुआ। जिनमे लालसिंह, रमणी, रामलाल, श्रीमति रेशम, रमेश एवं सोहनलाल आदि। पक्के मकानों में भी प्रत्येक मकान में तीन फुट पानी प्रवेश कर गया था। जिससे गेंहू, सरसो, चना इत्यादि खाद्य सामग्री नष्ट हो गई। पानी अभी तक गांव के चारों तरफ फैला हुआ है। नौगांवा और सुन्हेडा के बीच समतल भूमि में विस्तरित नदी का रूप धारण कर लिया है। इस कटाव के कारण एक सिक्ख जाति का मकान पूरी तरह से नष्ट हो गया। नदी के कटाव के कारण सड़क के उपर जो पुल बना हुआ था, वह भी क्षति ग्रस्त हो गया खेत नदी बन गयें जिनका पुन: खेत बनाना एक टेडी खीर है। इस स्थिति के बाद निष्कर्ष निकलता है कि इस साल जो बाढ आई है उसने अलवर एवं भरतपुर जिले में लोगो की कमर तोड़ दी है। सरकार को एवं स्वैच्छिक संस्थाओं को मिलकर जितनी जल्दी हो सके लोगों की मदद करे,ताकि उनके जीवन में नयेसवेरे की किरण दिखाई दें। ●

भरतपुर की बाढ़ — जैसा देखा

डीग में लोगों ने बताया कि यहाँ तो पशु जो बन्धे हुए थे, उन्हे खोलने तक का भी मौका नहीं मिला, सभी वहीं खत्म हो गयें। रविदासपुर गांव के पास ही एक रसिया गांव पहाड़ी के नीचे बसा हुआ हैं। वहां कच्चें घरों में ही ज्यादा नुकसान हुआ है। पक्के घरों को पर्वत राज की कृपा से उन्हे बचा लिया गया है। रसिया के पहाड़ी मोड़ होने के कारण मोड़ खाकर पानी चलता है। इसे आगे पनदोरी गांव जो आबादी में 3500 जनसंख्या वाला है तथा नारायना रामबाग आदि गांवों में कुछ कम नुकसान दिखाई देता है। लेकिन यहां के लोगो के सामने जो विकट समस्याए खडी हुई उनसे सभी का हृद्य रो उठता है। पीने के पानी के लिए महिलाओं को कई-कई किमी से पानी लाना पडता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान ने भी इन सभी के साथ घिनौना मजाक किया है। जहां कही हैन्ड पम्प दिखाई देते है। वहीं पर महिलाए पानी लेने के लिये पहुंचती है। सोचते है कि अभी तो मानसून का आवागमन भी नहीं है। जब मानसून आयेगा तब कैसा होगा ? यह सोचकर हृदय रो उठता है। डीग में प्रवेश करते ही सड़क के किनारे मकानों का ढेर ही देखने को मिला। शहर की सड़के व नालिया सब टूटे मिले जिस प्रकार पुराने लोग मजबूत है, उसी प्रकार कुछ पुराने घरों ने भी हिम्मत रखी, तथा नये बनाये मकान स्वाह हो गये। बाढ़ ने भी कम ताकत नहीं लगाई किले कि दीवारों को जरजर कर दिया। उत्तरी पूर्वी सड़क पर तीन-चार फुट पानी महीनों तक भरा रहा है। 26 जून को तो यहां घरों में भी पानी चार-पांच फुट तक अन्दर भरा था। जिससे बहुत जन धन की हानि हुई। खेतो की मेडबन्दी वह खेतो का कटाव व मिट्‌टी को रोकने के लिए लगाई जाती है। लेकिन घरों के अन्दर मेडबन्दी पानी से कैसे बचा जाये, या पानी घरों में ना घुसे इस कारण लगाई जा रहीं थी। जमीन के अन्दर दबे बिजली के तार भी बाहर निकल आये थे। कुओं पर रखे इंजन या तो कुओं मे गिर गये थे या पानी के साथ आये मिट्‌टी के कटाव में विलीन हो गये थे।

गोवर्धन-बरसाना मार्ग पर पानी में बहती झोपड़ी

फिर दल ने डीग से आगे प्रस्थान किया कुम्हेर के खेतों में पानी मिट्‌टी का कटाव करके ले गया था तथा खेतों में पानी भरा हुआ दिखाई देता था। कुओं की हालत बहुत खराब दिखाई देती है। जब कुम्हेर से आगे बढे तो ऐसा दृश्य दिखाई दिया कि जिन्दगी में पहली बार ही देखने को मिला। सड़के पानी में पूरी तरह डूबी हुई थी। लेकिन अब सड़को के चारो तरफ पानी ही पानी मानों समुन्द्र ही बह रहा हों, चारो ओर प्रलय ही प्रलय दिखाई देती थी। सब फसले नष्ट हो गई है। चारो ओर विनाश लीला ही नजर आती है। सभी मकान व झोपडियां

पानी में डूबी हुई थी। यह पानी बबूला ग्राम तक फैला हुआ था। यहां आगे भी फसल की कोई आशा नहीं थी। यहां आगे चलकर कुछ आशा की किरण नजर आती है। गिरधरपुर तक भी पानी भरा हुआ था। मकान गिरधरपुर के भी गिरें हुऐ थे तथा आदमी जो बचे थें वे बीमारी के शिकार हो रहे थे। जब वहाँ से आगे दल जाता है तो देखते है कि लोग सड़को की वहाँ थोडी उँचाई होने के कारण अपने सिर ढकने को तम्बूओं के छोटे-छोटे धरोन्दे बनाये हुऐ थे या कुछ चौड़े में ही बैठे थे। शायद अपनी जन्म भूमि के प्रति लगाव होने के कारण वे आशा लगाये बैठे थे कि हम यहां अपने स्थाई निवास पर लोटें। क्योकि मातृ भूमि सबसे प्यारी होती है। वे इस आशा मे ही भूखे प्यासे अपने बच्चों व पशुओं के साथ जीवन जी रहे हैं।

अब बाढ़ राहत दल धीरे-धीरे भरतपुर की और बढ़ता है। भरतपुर की निर्मल वायु भी यहां की बरबादी का सन्देश दूर से ही सुना देती है। शहर के अन्दर बहुत से आलीशान मकान स्थापत्य कला के बनाये हुऐं पानी के अन्दर दिखाई दे रहे थें। शहर की बहुत सी कॉलोनिया तेरह दिन से पानी में खडी है। रणजीतनगर, सूरजमल नगर, इदगाह कॉलोनी, श्यामनगर, रामनगर, तिलकनगर, हाउसिंग बोर्ड, सहयोग नगर, हनुमान नगर, नकम कटरा, आदर्श नगर, संजय कालोनी आदि। सोहनलाल खादी संस्था भरतपुर ने बताया की सत्ताईस जून की रात को बाढ़ आई उपरोक्त कॉलोनियों में दस फुट तक पानी भर गया। कुछ लोगों ने घर में कीमती सामान की वजह से मकान छोडने में थोडी दिक्कत महसूस हुई परन्तु मजबूर होकर उन्हे भी अपने-अपने घर छोडने पडे तथा उन्हे स्कूल व किले में शरण दी गई और भोजन की व्यवस्था के लिए ढाबें खुलवाये गये।

आर.एस.एस. तथा स्वयं सेवी संगठनों ने बाढ़ पीडितों की बहुत मदद की फिर स्वयं सेवी संस्थाओ की एक बैठक क्रान्ति गूर्जर गोल बाग रोड़ भरतपुर में की गई।

बैठक की जानकारी से तीन हजार लोगों के बेघर होने का तथा भरतपुर जिले में 11000 लोगों का बेघर होने का प्रमाण मिल रहा है। इस बाढ़ का गहराई से अध्ययन करने पर पता चला कि पहले ऐसी बाढ नहीं आई थी 133 बांध इस बार भरतपुर में टूटे। कुछ अलवर के बांध टूटने के कारण ऐसा हुआ। इस मौके पर सरकार ने कोई चेतावनी लोगों को पहले नहीं दी इस कारण ऐसे परिणाम सामने आये।

इस स्थिति से एक बात साफ होती है कि मानव को प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहियें जो कभी विकराल रूप धारण कर ले। सारे बांध नहीं टूटतें तो बाढ़ नहीं आती। जो लोग बिना परिणाम जाने या समझे आगे की बडी-बडी योजना बिना समझे बना देते है। उसके परिणाम बडे भंयकर होते है। इस प्रकार बाढ़ राहत दल लोगो का प्यार व आवश्यक सामग्री वितरण करता हुआ वापस अलवर के लिए आया, तथा बाढ़ मे प्रभावित लोगो की विभिन्न प्रकार की सामग्री से मदद करने के मनसूबों के साथ क्षेत्र में जाने की तैयारी में लग गया। ●

❑ **कन्हैया लाल गुर्जर**

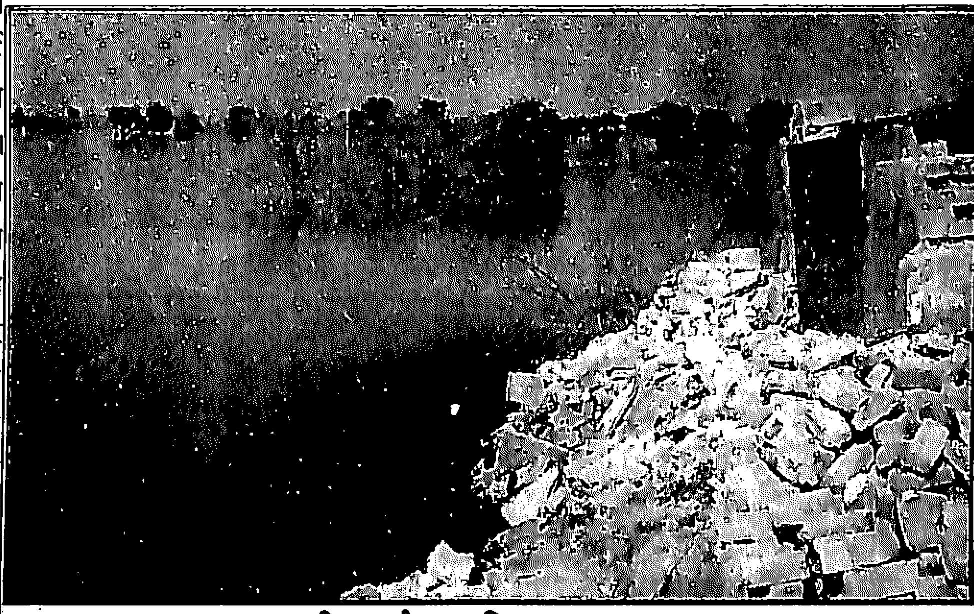

डीग मार्ग पर क्षतिग्रस्त मकान।

बाढ़ की पीड़ा
क्या कहते हैं लोग

तरुण भारत संघ के एक दल ने सात जुलाई 96 से अलवर होते हुए भरतपुर तक का सर्वे किया। इस दल को भरतपुर के लोगों ने जानकारियां दी। कुछ लोगों की बात उन्हीं के शब्दों में यहां बताई जा रही है।

नगर खादी समिति, नगर (भरतपुर) के श्री रुपराम तथा रामबीर कहते हैं

1. 24 जून 96 को पानी 5 फुट खड़ा था, जिसकी लम्बाई कांमा से बैर तक थी।

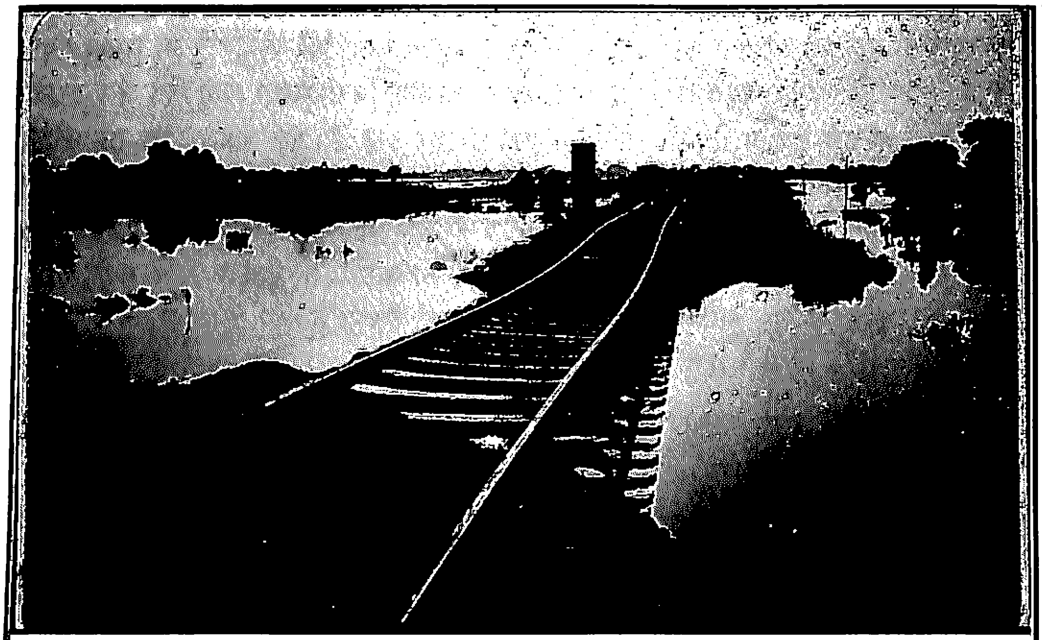

विकास की पटरी विनाश बनी।

2. सारी फसल नष्ट हो गई।
3. मिट्टी से कुंए भर गए, इसलिए पीने का पानी उपलब्ध नहीं है।
4. सरकार ने कोई सहायता नहीं की, लेकिन पटवारी आदि का सर्वे कार्य जारी रहा।
5. नगर का बांध टूट गया ऊपरा भी पाँच फुट चली, नगर बाढ़ की चपेट में आ गया।
6. रुपारेल नदी के ऊपर नगर में "तसई" बांध जिसको तटीय बांध कहतें हैं, जिसकी लम्बाई 10 कि.मी. है कई जगह से टूट गया।
7. गरीबों के कच्चे मकान भी गिर गये अब सिर ढकने को भी जगह नहीं है।
8. सरकार ने हैलीकॉप्टर से हवाई सर्वेक्षण करवाया है।
9. नगर क्षेत्र के गांव अरावली, तिराफा, थून, मोनोता कलां, बचूका, तमोराका, आदि गांव आज भी पानी में डूबें हुए हैं।
10. नगर में ही डीग रोड करीब एक कि.मी. भी पानी की चपेट से पूरी तरह ध्वस्त हो गया।
11 थून गांव में तट बंध के पास 600 परिवारों की आबादी वाले गांव में करीब 100 घर तो पूरी तरह बरबाद हो गये।
12. कोई सड़कों पर, कोई रेल की पटरियों पर अपने घर बनायें हुए है।
13. दुदावल, पादमा, सुजालपुर, आरसी पूरी तरह बरबाद हो गये। कई दिन इन लोगों को भूखा भी रहना पड़ा।
14. एक दूसरे गांव के घरों में जाकर शरण ली।
15. पशुओं में घर्रा, गलघोटू जैसी भयानक बीमारी फैल गई। कितनी ही भैंस व अन्य पशु मर गए।
16. हुलाना, वैसया, अरोदा, हन्तरा, गुहावली, बैराला का नरुआ आदि बांध भी पूरी तरह टूट गए।

17. खारी समिति में पानी भरा है। पचास फीसदी नुकसान हुआ है।

श्री ईश्वर दयाल प्रधानाध्यापक कहते हैं:

1. बाढ़ के साथ पानी में बह कर ईंधन, डलिया, चारा, छान, छप्पर आदि आये।
2. खाद्य सामग्री सब नष्ट हो गई, कुए मिट्टी में पट गए।
3. तूफानी रात 7 बजे से शुरू होकर 11 बजे तक रही, इसके साथ अलवर से 3 फुट पानी भी छोड़ा गया।
4. सभी क्षेत्रीय सड़कें क्षतिग्रस्त व रविदासपुरा पूरा क्षतिग्रस्त।
5. कच्चे पक्के मकान सब नष्ट हो गए। आदमी मरने की कोई पक्की जानकारी नहीं।
6. एक महिला छप्पर पर बैठी पानी में बहती आई, राहत वालों ने उसे बचाया।
7. बकरा, बेढम बांध गांव के पास ही टूट गया। धनाढ्य लोगों ने गरीबों को पूरी, रोटी सब्जी वितरित की।
8. विद्युत व्यवस्था ठप्प। क्षतिपूर्ति की लोगों ने मांग की। 24 परिवार स्कूल में शरण लिए हुए थे।
9. पान्होरी के पास पानी भरा। बिजली के खम्बे टूटे हुए पाये गए।

डीग में लोगों ने बताया:

1. मकान गिरे गये, क्योंकि बाढ़ का प्रकोप भयंकर था। बाजार में भी 3 फुट पानी भरा पाया।
2. डीग में घर-घर के सामने बांध बने हुए हैं। जहां तक आंखों से देखा जा सकता हैं, वहां तक पानी ही पानी नजर आता है। रोड पर 14 दिन तक पानी रहा। यातायात भी बन्द रहा, जिससे जन जीवन अस्त-व्यस्त हुआ। डीग से कुम्हेर तक रोड कटी हुई मिली। कुम्हेर तहसील की लॉकी, कुलवारा, सावोरा इत्यादि गांव बाढ़ की गम्भीर चपेट में थे, कुम्हेरा में अभी भी पानी लोगों द्वारा टंकियों से मंगाया जा रहा है।

कुम्हेर से भरतपुर रोड की स्थिति:

1. दृष्टि गोचर तक पानी चढ़ा हुआ था।
2. वायु प्रदूषण भी पाया गया। रोड के किनारे पर पाइप लाइनें निकली हुई मिली।
3. रेलवे क्रासिंग पर 25 परिवार शरण लिये हुए थे।
4. भगवान टॉकीज के चारों ओर पानी भरा हुआ था।
5. कृषि व सब्जी मण्डी में बदबू फैली हुई थी।
6. इस प्रकार देखने में आया कि बीमारी फैलने के पूरे-पूरे आसार हो रहे हैं।

भरतपुर की स्थिति 10 जुलाई 96 को:

1. भरतपुर क्षेत्र में ज्यादा ही नुकसान पाया गया। कृषि उपज मण्डी, सब्जी मण्डी अनाज मण्डी, नई मण्डी 'सरसों' मोती झील, नया अस्पताल, नमक कटरा, सूरजपोल, सिमको, बैंगन फैक्ट्री इत्यादि प्रमुख स्थानों पर ज्यादा नुकसान पाया गया।

श्री राकेश फोजदार ने कहा:

✻ भरतपुर को महाराजा सूरजसिंह ने बसाया था। उस समय इसमें दलदली थी।

✻ यहां का पानी खारा है। जब इस स्थान पर नमक पैदा होता था, उसके जगह-जगह टीले बन गए। नमक विरोधी वार्तालाप भी हुई।

✻ इसमें पहले समय में

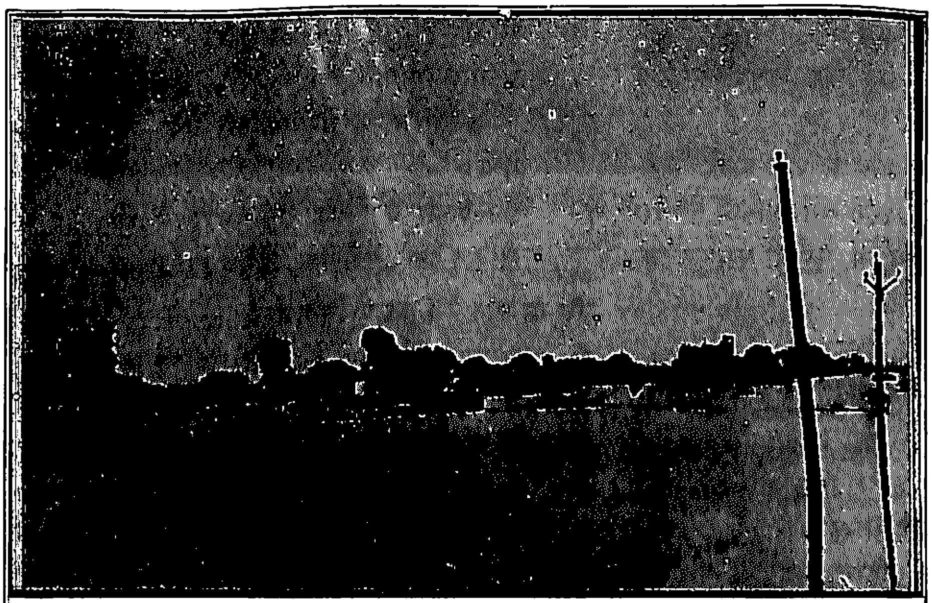

बाढ़ के पानी में डूबा डीग रेलवे स्टेशन।

तीन रुध थी। 1. मोती झील के पास, 2. सामलदास की थडी सिमको बैगन फैक्ट्री के पास, 3. केवला देव घना जिसमें अब केवल केवलादेव घना शेष है।

* दो नदिया थी 1. अरावली की पहाड़ियों का पानी अलवर छोड़कर भरतपुर आ जाता था। 2. बाणगंगा यह उज्जैन से गांव कुरुका तक है। कुरका इन दोनों का संगम है।
* इसके दक्षिण में 16 कि.मी. लम्बा अजान डेम प्रमुख बांध है।
* अजान डेम सेवर से आधापुर कल्याणपुर व खानवा तक लम्बा है। इसको कोहनी बांध भी कहते हैं। इसका पानी सेवर अमर, सेवर ओवर से घना में गिरकर फतेहपुर सीकरी होता हुआ आगरा यमुना में गिर जाता है।
* उसके पूर्वी सीमा पर चिकसाना बांध है, जिसका पानी खारी नदी में गिर कर आगरा यमुना में चला जाता है।
* इस प्रकार जल संरक्षण पद्धति को चीन में सबसे अधिक अपनाया गया।
* सन् 1924,72,95 में अब तक बाढ़ आई।
* आगरा केनाल, ओखला बेराज से निकाला गया।
* हरियाणा से भरतपुर के लिए जो भी बाढ़ें आई, वे सब ही इसे दुख देने के लिए आई।
* 1927 में यहां पर 66 बांध थे।
* 1996 में पहली बार भयंकर बाढ़ आई। यह बाढ़ 24 से 30 जून तक रही।
* भरतपुर के लिए बम्बोरा बांध से पानी आता है।
* रुपारेला नदी का जल 22200 वर्ग मील में है। 70 बांधों की चपेट में डीग, कामां, पहाड़ी भरतपुर तक प्रभावित है।
* इस बार 35 बांध भरतपुर के टूट गये हैं।
* तसई बांध जिसे तटीय भी कहते हैं। 7 जगह से टूटा।
* भरतपुर में छिटपुट मिलाकर 133 बांध टूट गये। प्रशासन की भूमिका संदिग्ध रही।
* जबीना, सोगर, भरतपुर, तुहिमा, पिडयानी, पीरनगर आदि गांव में दवाईयां ओर ब्लीचिंग पाउडर पहुंच रहा है।
* पानी का टैंकर फ्री रणजीत नगर में चल रहा है। प्रधान मन्त्री ने राहत कोष से भरतपुर के लिए 15 करोड़ 40 लाख राशि मंजूर की है।
* अब तक मरने वालों की संख्या 27 है।
* ल्यूपिन संस्था भरतपुर द्वारा डीग कुम्हेर, थून और कुम्हेर के 35 गांवों में तिरपाल खाना दवाईयां विवरण घर बनाने की योजना व कामां डीग में आदि सहायता दी जा रही है।
* ल्यूपिन संस्था द्वारा सेवर पंचायत में 250 घर बनाने की योजना लागू कर दी गई है।
* समृद्धि योजना द्वारा सेवर ब्लाक लुहिया, टोकपुर, भेडोर, पीरनगर, गावडी, नंगला, सॉवर आदि में बाढ़ पीड़ितों के लिए सहायता दी जा रही है।
* भरतपुर किला बिहारी जी का मन्दिर 500 से 2000 परिवार वर्तमान में। किले में 100 तथा बिहारी जी के मन्दिर में 5 परिवार शरण लिए हुए हैं।

डीग से कामां रोड

1. डीग से दीदावली तक रोड की टूट गम्भीर रूप से पाई गई।
2. इन्द्रोली के चारों तरफ जल ही जल व्याप्त है।
3. कामां बाई पास डूबा हुआ है।
4. कामां में 23-24 जून को हैलीकॉप्टर ने हवाई सर्वेक्षण में लोगों को कुछ राशन सामग्री वितरित की।
5. सरकार द्वारा पूरी, आटा चावल घी, दाल, इत्यादि वितरित किया गया।
6. ऊंचा गांव का मेव बाढ़ की चपेट में आकर मर गया।
7. इस प्रकार की बाढ़ सन् 1972 में भी आई थी। लेकिन इतना नुकसान नहीं हुआ था।

संघ के दल ने निष्कर्ष निकाला:

- भरतपुर एवं कामां में सर्वाधिक नुकसान हुआ।
- नगर तहसील के गांव में भी लोगों की हालत ज्यादा ही नाजुक हो गई।
- भयंकर बीमारी फैलने की संभावना है।
- रूपा रेल नदी खतरे का कारण बनी।
- सरकार की संदिग्ध भूमिका रही।
- सरकार एवं स्वंयसेवी संस्थाओं द्वारा अविलम्ब सहायता करने की आवश्यकता है। ●

एक सर्वेक्षण के अनुसार भरतपुर जिले में 5 लाख लोग बाढ़ से विस्थापित हुए हैं। शहर में ही लगभग एक हजार परिवारों को मकानों की सख्त आवश्यकता है जबकि 3 हजार परिवारों को (कम से कम) ग्रामीण क्षेत्रों में मकानों की आवश्यकता हैं। वह भी मानसून की वर्षा से पहले एक हजार से दो हजार के मध्य कुछ परिवार ऐसे हैं, जो थोड़ी सी मदद से ही अपने मकान बना सकते हैं। लोगों की मदद करने में प्रशासन की भूमिका संदिग्ध रही है तथा प्रशासन असंमजस में हैं। प्रशासन सोच नहीं पा रहा है कि वह क्या करें? वह तो सर्वेक्षण में ही उलझा हुआ हैं। सरकार द्वारा दवाईयां, आटा, दाल व मिट्टी का तेल शहरी क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित लोगों को नियंत्रित दरों पर उपलब्ध कराया जा रहा है। समाचार पत्रों व भरतपुर निवासी 30 वर्षीय नरेन्द्र सिंह के अनुसार 'इस बाढ़ से भरतपुर में 73 मौते हुई हैं, जबकि सरकारी आंकड़े केवल 27 मौते होने का दावा कर रहे हैं। एक दूसरे सर्वेक्षण के अनुसार भरतपुर जिले में 133 छोटे-बड़े बांध इस अचानक आयी बाढ़ से टूट गये हैं। शहर में पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था टैंकरों से की जा रही है। शहर में आसपास व खाली पड़ी जमीन पर लगाई गई विलायती बबूल व अनेक पेड़ पानी भरा रहने के कारण सूख गये हैं। कुओं व हैंडपम्पों में कीटनाशक दवाई सरकार द्वारा डाली जा रही है। जिले में कार्यरत कई गैर सरकारी संस्थाएं हाथ पर हाथ रखे निष्क्रिय बैठी है। थोड़ा बहुत भोजन सामग्री बांटने व सर्वेक्षण कराने का शोर मचा रही हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस दूसरे वर्ग के क्षेत्र में लोगों की स्थिति बहुत दयनीय और शोचनीय है।

पहाडी तहसील :

यह क्षेत्र बाढ भयंकरता व क्रूरता को गर्दन पर लटकी तेजधार वाली तलवार की तरह झेल रहा है । इस क्षेत्र में पहले आयी बाढ़ का प्रभाव तो कम हुआ है । मगर उपर की तरफ किन कचनारा के बांध को हरियाणावासियो द्वारा तोड देने के भय से आतंकित व सहमा हुआ है । क्योंकि कचनारा का बांध टूट जाने से पहाडी तहसील के 75 प्रतिशत क्षेत्र जलमगन हो जायेगा,जिसके कारण कितने जान-माल की हानि होगी ,इसका अन्दाजा सहज में ही लगाया जा सकता है । बाढ़ के कारण हुए नुकसान की भरपाई कर पाना तो मुश्किल है मगर लोगो को दवाईयों व शुद्ध पानी के साथ-साथ गरीबो हेतु भोजन मकान एवं चारे की जरूरत है।

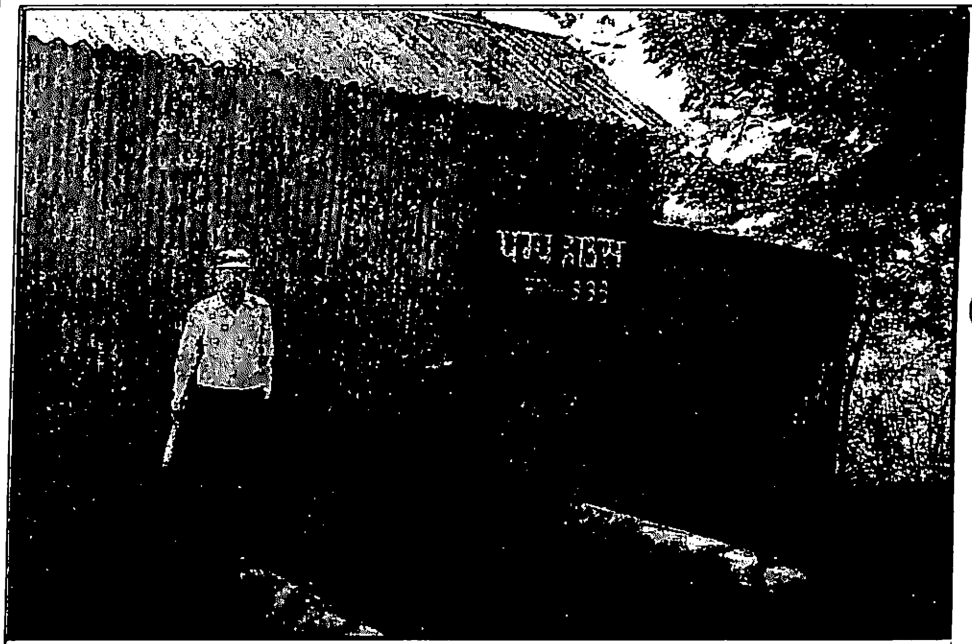

के. पी. ड्रेन पर लगा पम्प हाउस जो लोगों के काम नहीं आया।

प्रशासन के कामों से संतुष्टि नहीं

भरतपुर मे आई बाढ़ के कारण :

महाराजा सूरजमल ने भरतपुर के बसाते समय ही इस क्षेत्र में पानी की आवक को ध्यान में रखते हुए पानी

निकासी का भी उचित प्रबन्ध किया था । अलवर से आने वाली रूपारेल,जयपुर से आने वाली बाणगंगा तथा सवाई माधोपुर की तरफ से जल लेकर आने वाली गम्भीर नदियां ही इस क्षेत्र में बाढ़ का प्रमुख कारण बनती है। इन मौसमी बरसाती नदियों के द्वार आये जल को 66 बडे छोटे बांधो मे रोककर कुओं का पुर्नसिंचन एवं हजारों हैक्टयर भूमि को सिंचन हेतु अनेक छोटी-बड़ी नहरों का विकास और अन्तत: आवश्यक से अधिक जल को यमुना में पहुचाने का इन्तजाम भी महाराजा ने किया था मगर विडम्बना और दु:ख की बात यह है कि इस पूरे जल तंत्र का नियंत्रण करने वाला सिचाई विभाग पूर्णतया अकर्मण्य व कर्तव्य विमुख हो चुका है। पिछले वर्ष आई बाढ के कारण आंशिक क्षतिग्रस्त बाध एवं नहरों की मरम्मत सरकारी विभागों द्वारा न करके मरम्मत के नाम पर करोड़ों रूपया हजम कर लिया । इस जल तंत्र के रख रखाव पर सिचाई विभाग द्वारा लाखों रूपया वेतन व भत्तों के रूप में कर्मचारियों व अधिकारियों पर महावार खर्च करता है लेकिन आवश्यकता पड़ने पर जल की आवक कम या अधिक पड़ने पर सरकारी तंत्र हमेशा से निष्क्रियता का परिचय ही देता है । न तो वह बाढ़ से निपटने और न सूखे से निपटने की स्थिति में कुछ कर सकता है । इस बार भी ये ही दोहराया गया । यह भयंकर व मूसलाधार वर्षा के कारण अचानक ही रूपारेल नदी में जल की आवक बहुत हो गई, मगर पानी को रोकने तथा यमुना तक ले जाने वाले तंत्र क्षतिग्रस्त तो थे ही परन्तु मुख्य निकासी द्वार सरकारी कर्मचारियों की लापरवाही व असतर्कता के कारण आवश्यकता के अनुरूप नहीं खोले गये, और परिणाम बाढ के रूप में सामने आ गया । सिचाई विभाग ही नहीं बाढ़ के लिए अन्य भी विभाग दोषी है। सडक व रेल मार्ग बनाते समय पहले से विद्यमान बांधों के जलागम क्षेत्रों तथा उनमें आने वाले पानी का कभी-कभी ध्यान ही नही रखा जाता, जिसका स्पष्ट उदाहरण अलवर में स्थित बम्बोरा का बांध हैं । इसके पास सडक मार्ग बनाते समय बांध के जलागम क्षेत्र व पाल से छेड़छाड की गयी । पहली बरसात में ही वह टूटा और उसके अथाह जल से नीचे के सब बाध टूटते चले गये । अंतत: यह जल रूपा रेल से होता हुआ मरममत विहीन भरतपुर के जल तंत्र में जाकर यमुना नदी में जाने के बजाय उत्तर दिशा में बढ़कर अनेक क्षेत्रों में बाढ़ का कारण बना । नगर विकास न्यास एवं नगर पालिका ने तो भरतपुर के अनेको निचले हिस्सो में कई कॉलोनियां बसा दी है । जैसे अटल डैम के भराव क्षेत्र में बसी कॉलोनियां, नगर सुधर न्यास द्वारा बसाया गया ट्रांसपोर्ट नगर आदि । संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह बाढ मात्र प्राकृतिक प्रकोप न होकर मानव की लापरवाही व गैर जिम्मेदारी से आई।

राहत कार्यक्रम :-

इन क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति का अध्ययन करने से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि,प्रत्येक वर्ग की अलग वर्तमान स्थिति के कारण इन क्षेत्रों की समस्याएं भिन्न भिन्न हैं । यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यहां पर चलाये जा सकने वाले राहत कार्यक्रम एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध रखते हुए भी भी भिन्न-भिन्न स्वरूप में लिये जायेंगे । लोगो की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही इन कार्यक्रमों का स्वरूप आकार-प्रकार तथा लागू करने का तरीका निर्धारित करना होगा । एक अहम् प्रश्न जो सामने आता है, वह है सरकार द्वारा चलाये जा रहे बाढ़ राहत कार्यक्रम। यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि सरकार ने बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में मात्र कुछ भोजन के पैकिट व दवाईयों को ही पूर्ण कार्यक्रम मानकर राहत कार्य किया है। यदि सरकारी दफ्तरों में जाकर ऑफिसरों या कर्मचारी वर्ग से बातें करें भी तो उत्तर मिलता है कि सर्वेक्षण किया जायेगा या कर रहे हैं। अब सोचने की बात यह है कब सर्वेक्षण किया जायेगा। कब राहत कार्यक्रम बनेगा। और कब वह लागू होगा। तथा कब लोगों को राहत मिलेगी। जबकि मानसून की वर्षा शुरू होने वाली है। न तो पीड़ितों के पास भोजन है और न ही वस्त्र तथा सिर छुपाने के लिए छत। अब ऐसे में क्या होगा यह सोचकर ही दिल परेशान हो जाता है।

आवश्यकता है एक समग्र पूर्ण और विस्तृत बाढ़ राहत कार्यक्रम बनाने की तथा उसे लागू करने की। वह भी इस प्रकार कि शीघ्रातिशीघ्र लोगों को राहत मिले। मात्र एक या दो सप्ताह के अन्दर अर्थात मानसूनी वर्षा से पहले। भोजन, दवाईयां, ईंधन, वस्त्र, चारा, शुद्ध पानी और सिर छुपाने के लिए मकान न सही कम से कम तिरपाल या प्लास्टिक की सीट ही पीड़ितों तक पहुंच जाये तो अच्छा रहेगा। ●

❑ **डॉ. मैनपाल सिंह**

बाढ़ त्रासदी का स्वास्थ्य पर प्रभाव

राजस्थान के अलवर-भरतपुर क्षेत्र की प्रलयकारी बाढ़ में तरूण भारत संघ, भीकमपुरा (अलवर) ने जून 1996 से प्रारंभ कर नवम्बर 96 और कुछ क्षेत्रों में उसके बाद तक अपनी क्षमता के अनुरूप अधिकतम योगदान देने का प्रयास किया। अधिकांश क्षेत्रों में तरूण भारत संघ की टीम राहत कार्यो के लिए पहुँचने में सबसे अग्रणी थी। कई क्षेत्रों में तो राहत कार्य पहुँचाने वाली एक मात्र संस्था थी। इस राहत कार्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना था। तरूण भारत संघ की चिकित्सा टीम के पास जिन विभिन्न रोगों के मरीज आए, यह रिपोर्ट उनकी संख्या के तुलनात्मक अध्ययन से बाढ़ के स्वास्थ्य प्रभाव एवं महामारी पक्ष के अध्ययन का प्रयास करती है।

विशेष टिप्पणी :

1. चिकित्सा के दौरान रोगियों का निदान लक्षण के आधार पर किया गया। किसी भी रोगी का पैथोलोजिकल टेस्ट नहीं किया गया और न ही किसी रोगी की रक्त की स्लाइड बनाई गई।
2. चिकित्सा का मुख्य मकसद उस समय उन्हें तात्कालिक लाभ पहुँचाना था।
3. चिकित्सा के दौरान रोगियों को आयुर्वेदिक एवं एलोपैथिक औषधियाँ निःशुल्क उपलब्ध कराई गई।
4. तालिकाओं में वही रोगी दिखाए गए, जो औषधी लेने चिकित्सक के पास आए। वास्तविक रोगियों की संख्या इससे अधिक हो सकती है।
5. बाढ़ के दौरान 155 गाँवों के करीब 55हजार रोगियों की चिकित्सा की गई, किन्तु तालिका में मात्र स्थिति आंकलन हेतु कम गांव दर्शाए गए हैं।
6. चिकित्सा के दौरान रोगियों को औषधि एवं सलाह दी गई। आवश्यकता समझने पर उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया।

परिणाम एवं निष्कर्ष:

(क) तीनों ही क्षेत्रों में विभिन्न रोगों का काफी प्रकोप रहा,जो नवम्बर तक भी कम पडता नहीं लग रहा था।

(ख) पहले माह में तीनों ही क्षेत्रों में सर्वाधिक संख्या चोट, कीट दंश सांप बिच्छु का काटना सम्मिलित थी। संभवतः बाढ़ के प्रारंभिक दिनों में मकान गिरने के कारण भी चोट की घटनाएं अधिक हुई हो। इसके बाद पाचन रोगों की प्रचुरता थी।

(ग) पेचिश, ऑव दस्त जैसे जल प्रदूषण के कारण होने वाले संक्रामक रोग दूसरे माह में काफी बढ गए। अलवर जिले में इनका प्रकोप दो माह के बाद से घटने लगा, पर कार्यों में जल प्रदूषण और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं होने की समस्या के कारण दो माह बाद भी इन रोगों का प्रसार घटने के बजाए बढ़ा।

(घ) जैसे जैसे समय बीता, मच्छर बढ़े और मलेरिया ने महामारी का रूप धारण कर लिया। तीसरे काल में एक चौथाई रोगी ज्वर विशेष रूप से मलेरिया के ही थे। दो माह तक कुल रोगियों में नेत्र रोगी मात्र 1-2 फीसदी थे, पर तीसरे काल में इनकी संख्या 15 से 22 फीसदी तक पहुँच गई। स्पष्टतया यह भी महामारी थी।

(च) बाढ़ के कारण फैली बीमारियों से श्रम शक्ति और जीवन की भी अत्यधिक हानि हुई। पीडा तो साथ हुई। बाढ़ के माह में मलेरिया तथा नेत्र रोग महामारी के रूप में उभरकर सामने आए। बाढ़ के दौरान चिकित्सक टीम को जो समस्याएं देखने को आयी वह निम्न थी।

1. दूधः

बाढ़ के कारण दुधारू पशुओं के मरने से तथा चारे की समस्या के कारण दूध की अत्यन्त कमी हो गयी। दूध की कमी से बच्चों में शारीरिक कमजोरी तथा पाचन शक्ति एवं पोषण परेशानी से सम्बन्धित रोगों की उत्पत्ति हुई। बच्चों में विटामिन की कमी भी उत्पन्न हुई।

2. धात्री एवं गर्भवती महिलाओं को उचित पोषक आहारः-

बाढ़ के कारण खेती तथा घरों में रखे सुरक्षित अन्न भण्डार लगभग पूर्णतया नष्ट हो गये जिसके कारण लोगों को पेट भरने की समस्या उत्पन्न हो गयी। प्रारम्भ के 6-7 दिन तक तो किसी किसी को कुछ भी आहार नहीं मिला, जिसके फलस्वरूप शारीरिक कमजोरी तथा गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पडा। जिसके कारण लीवर, स्क्रवी व एनीमिया आदि रोग उत्पन्न हो गये।सामान्य खानपान के बारे में पूछने पर पता चला कि वे पहले से ही उचित पोषक आहार नहीं रही थी। इसका कारण उनकी निर्धनता है। दूसरा कारण मेव बाहुल्य समुदाय में चार से सात बच्चे एक से दो साल के अन्तर पर पैदा होना है। बाढ़ के दौरान हुयी महिलाओं के प्रसव में भी अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ा जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पडा।

3. पीने का पानीः-

भारी वर्षा से उत्पन्न बाढ़ ने क्षेत्र के कच्चे कुओं को मिट्टी से भर दिया तथा जो पक्के थे, उनमें भी पूरी तरह प्रदूषित पानी भर गया। हैण्डपम्प पानी में डूब गये, जिसके कारण लोग प्रदूषित पानी को पीकर विभिन्न प्रकार की सामान्य तथा गम्भीर बीमारियों से ग्रसित हो गये। जिनमें से कुछ निम्न हैं। Bacillary Dysemtry, Amoebic Dysemtry,Diarroea, Jaundice, Constipation, Gastritis, Vomiting, Piles Worms, Cough आदि। दूषित पानी में बच्चों के नहाने से तथा खेतों में जो तालाब बन गये थे। उनमें नहाने से कान का बहना दर्द, चर्म रोग, फोडा-फुन्सी, दाद-खाज आदि रोग हुए। सर्वाधिक रोगी उपर्युक्त रोगों से ही ग्रस्ति पाये गये। लगभग 40 प्रतिशत रोगी केवल दूषित पानी के कारण ही बीमार हुए। कुओं में

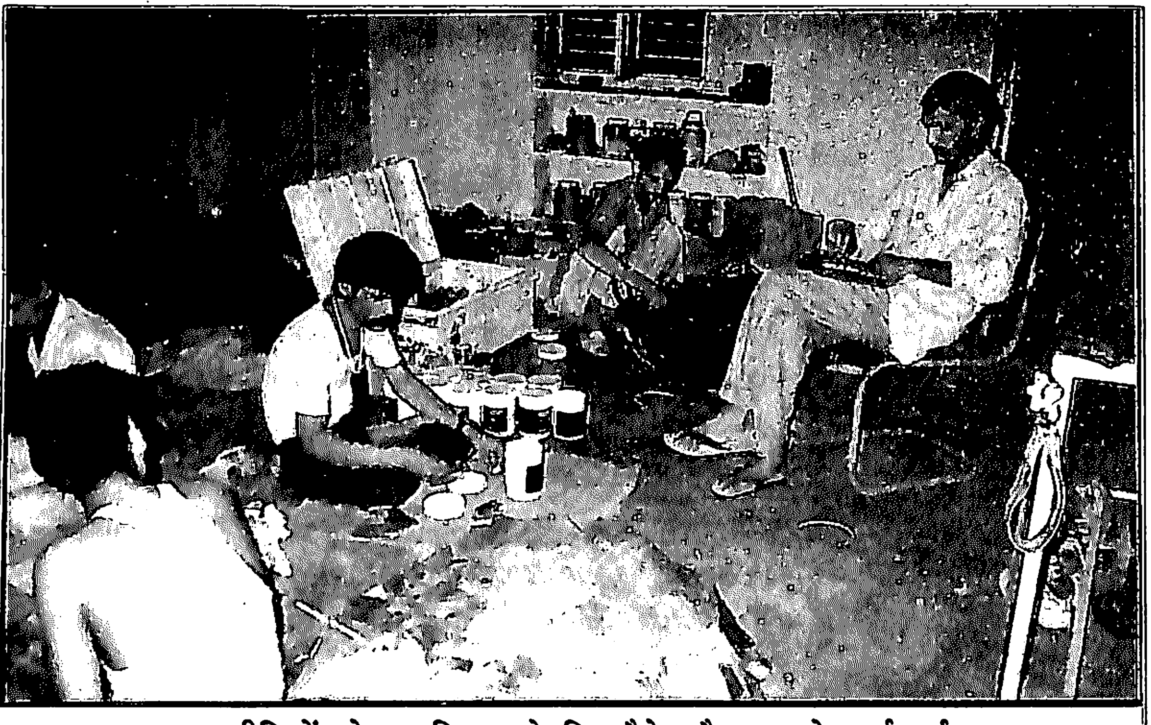

बाढ़ पीड़ितों को दवा वितरण के लिए पैकेट तैयार करते कार्यकर्ता।

ब्लीचिंग पाउडर ना डाले जाने से समस्या ने अत्यन्त गम्भीर रूप ले लिया था। काफी समय बाद जब बाढ़ का पानी उतरा एवं रास्ते खुलने शुरू हुए, तब जाकर कहीं सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों ने कुऐं में दवा डालने का काम तथा क्लोरीन टेबलेट बॉटने का कार्य किया। यह कार्य पूर्ण रूप से हर गांव में तथा हर कुए में नहीं किया गया। इसके परिणाम स्वरूप आज भी लोग दूषित पानी का सेवन कर रहे हैं एवं बीमार हो रहे हैं।

तरुण भारत संघ की मदद का हिसाब देखते कार्यकर्ता।

4. मकान/अस्थाई आवासः-

ज्यादातर लोग कच्चे मकानों में (लगभग 60 से 75 प्रतिशत तक) रहते थे। वर्षा एवं बाढ़ ने उनके घरों को पूर्णतया नष्ट कर दिया। पक्के घर भी चटक गये या बैठ गये। ज्यादातर लोगों के घरों एवं गांवों में पानी होने के कारण लोगों को अस्थाई आवास की व्यवस्था करनी पडी। इनमें ज्यादातर तो खुले आकाश के नीचे या तिरपाल के अन्दर निवास कर रहे थे।

खुले में रहने के कारण उन्हें जुकाम, खांसी, स्वांस, दमा, निमोनिया आदि जैसे रोगों से पीडित हो गये। साथ ही साथ बुखार भी लोगों को लगातार होता रहा । लगभग 20 प्रतिशत रोगी उपर्युक्त रोगों से पीडित रहे एवं आज भी हैं। इसी कारण तरूण भारत संघ ने उन्हें यथा सम्भव तिरपाल, टीन शैड, वस्त्र आदि वितरित किये, क्योंकि बिना कारण दूर किये चिकित्सा का कोई अपेक्षित परिणाम मिलने की आशा नहीं थी।

5. भोजन एवं ईंधन :-

बाढ़ से हुए नुकसान में सर्वाधिक नुकसान घरों में रखे हुए अन्न भण्डार तथा बर्तनों का हुआ, जिसके कारण लोगों को भोजन की समस्या उत्पन्न हो गयी। भर पेट भोजन न मिलने से तथा असमय में मिलने से या न मिलने से भी उनकी पाचन क्षमता व पोषण से कई रोग उत्पन्न हो गये। यदि कच्चा भोजन मिला भी तो ईंधन की कमी या नहीं होने के कारण नहीं बन सका, क्योंकि बाढ़ ने ऊपले लकडी आदि सभी गीले कर दिये थे तथा जलाने के योग्य नहीं थे। मिट्टी के तेल की आपूर्ति भी बाढ़ के कारण पूर्णतया बंद थी। इस वजह से लोगों को पेट भरने के लिए गम्भीर समस्या का सामना करना पडा।

6. कपडा :-

बाढ़ में मकानों के गिरने तथा सामान नष्ट हो जाने के कारण लोगों के पास पहनने एवं ओढ़ने के लिए पर्याप्त वस्त्रनहीं थे। खुले में रहने से तथा कम वस्त्रों के होने से सर्दी, जुकाम, बुखार, खांसी, निमोनिया, सांस, दमा आदि रोग हो गये।

7. यातायात :-

पूरे क्षेत्र में जल भरा होने से तथा सडकों के कट जाने से आवागमन का मार्ग पैदल या नाव के द्वारा ही था। पानी में चलने से तथा भीगे रहने से लोगों को विभिन्न प्रकार के चर्मरोग हो गये।

8. पशुधन एवं चारा:-

बाढ़ में पशुधन की जान माल का काफी नुकसान हुआ था। चारा लगभग नष्ट हो जाने से पशुओं की दूध देने की क्षमता कम या समाप्त हो गयी। दूषित पानी पीकर उन्हें भी कई गम्भीर रोग हो गये। दूध न होने से बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ा।

9. खेती :-

बाढ़ ने पूरे के पूरे क्षेत्र को जलमग्न कर दिया था। इससे खरीफ की फसल पूर्णतया नष्ट हो गयी,जिसके कारण लोगों की आर्थिक स्थिति एकदम चरमरा गयी। किसी-किसी गांव में तो अभी भी पानी भरा हुआ है, जहां रबी की फसल का हो पाना सम्भव नहीं है। जैसे सबलगढ व कलतरिया आदि। खेती नहीं होने से लोग भुखमरी के कगार पर आ गये हैं। शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर होकर विटामिन की कमी के शिकार हो गये हैं। लगभग प्रत्येक गांव में 7 से 10 प्रतिशत तक इस प्रकार के रोगी पाये गये।

महामारी प्रकोप

मलेरिया :

प्रारंभ से ही मलेरिया के रोगी पाये गये, किन्तु लगातार होती वर्षा से प्रारंभ के सप्ताहों में मच्छरों को पनपने का पूर्ण स्थान नहीं मिला किन्तु वर्षा के रूकते हुये तथा डी.डी.टी. का समय पर छिडकाव न होने से जल ग्रहण क्षेत्र में मच्छरों का प्रकोप बढा तथा मलेरिया ने पूरे क्षेत्र को अपनी गिरफ्त में ले लिया। लगभग 30 से 35 प्रतिशत तक लोग मलेरिया से प्रभावित रहे। इस बार मृत्यु दर भी अत्यन्त अधिक रही। अपनी सीमाओं के कारण तरूण भारत संघ ने रोगियों के रक्त की स्लाइड तो नहीं बनाई, किन्तु मलेरिया के लिए पूर्ण रूप से सक्षम उचित औषधियों का वितरण किया जिसके कारण लोगों को काफी राहत पहुँची।

दवा वितरण की तैयारी करते तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता

कन्जाक्टिवाइटिस (ऑख दुखना):

सितम्बर के महीने में अलवर एवं भरतपुर में कन्जाक्टिवाइटिस एक महामारी के रूप में फैली जिसके कारण लगभग 25 से 30 प्रतिशत तक लोग प्रभावित हुए।

बाढ़ के दौरान देखने में आया कि महिलाओं में श्वेत प्रदर एवं रक्त प्रदर रोग सर्वाधिक है, जिसका मुख्य कारण महिलाओं की अन्दरूनी सफाई न रखने के कारण सर्वाधिक है। चिकित्सा के दौरान भी संकोच व शर्मवश दवा नहीं लेती थी। लगभग हर गांव में प्रत्येक तीसरी महिला इस रोग से प्रभावित थी। ●

❑ वैद्य संजय सिंह

तीनों क्षेत्रों एवं तीनों कालों की वर्गीकृत रोगी-संख्या का समायोजन

		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
क्षेत्र एवं काल	कुल रोगी	पेचिस आंव दस्त	अन्य पाचन रोग	श्वास रोग	विषाणु एवं परजीवी रोग	चर्म रोग	नेत्र रोग	नाक,कान गले के रोग	मसूड़े एवं दंत रोग	मूत्र रोग	कुपोषण जन्य रोग	प्रदर एवं गुप्त रोग	मलेरिया-टायफायड एवं अन्य रोग	चोट कीट-दंश आदि
(1) किशनगढ़ बास-कोट कासिम														
(क) पहले 30 दिन	4607	7%	14%	13%	4%	10%	2%	6%	1%	3%	7%	8%	9%	16%
(ख) 30-60 दिन	4491	11%	13%	11%	4%	9%	1%	6%	1%	3%	8%	9%	8%	11%
(ग) 60 दिन के बाद	4850	7%	7%	5%	3%	4%	18%	4%	1%	2%	6%	5%	29%	9%
(2) रामगढ़														
(क) पहले 30 दिन	2623	5%	16%	11%	3%	8%	2%	5%	2%	2%	8%	11%	12%	15%
(ख) 30-60 दिन	2118	9%	19%	8%	3%	7%	2%	4%	1%	5%	8%	7%	17%	12%
(ग) 60 दिन के बाद	2333	7%	8%	5%	2%	3%	22%	3%	1%	2%	5%	5%	26%	10%
(3) कामां-भरतपुर														
(क) पहले 30 दिन	4075	9%	14%	12%	3%	11%	2%	5%	2%	3%	7%	9%	9%	14%
(ख) 30-60 दिन	4276	11%	14%	11%	3%	11%	1%	5%	1%	2%	6%	10%	14%	10%
(ग) 60 दिन के बाद	3752	12%	13%	6%	3%	5%	15%	4%	1%	2%	5%	5%	20%	9%

तबाही के बाद अलवर

रामगढ के बांधोली के बास में आई बाढ़ केवल अतिवृष्टि का परिणाम नहीं, बल्कि अलवर-भिवाड़ी हाईवे तथा मथुरा-अलवर रेल लाईन की ऊँचाई के कारण पुराने बांध व जोहडों का जलग्रहण क्षेत्र घट या बढ गया जिस कारण वर्षा जल का दबाव बांध सहन नहीं कर सके। इनकी देखभाल व मरम्मत भी समय पर पूरी नहीं हुई। सरकार के अधिकतर बांध टूट गये। बांधों से निकले जल ने बाढ़ का रूप धारण कर लिया।

सड़क के कारण बम्बोरा जोहड की पाल दो मीटर नीचे कर दी गई जबकि उल्टा इस सड़क की ऊँचाई बढ़ने के कारण इस बम्बोरा जोहड में पानी की आवक बढ गयी जिससे यह जोहड टूट गया और बम्बोरा घाटी में सड़क को भी बहाकर ले गया।

खानपुर परियोजना के तहत लगभग साढ़े चार करोड़ में बना विदरका ओदाका बांध का वर्ष 1995 में जलग्रहण क्षेत्र 5500 हेक्टयर था। अब इसका सड़क के कारण जल ग्रहण क्षेत्र बढ़कर 6300 हेक्टयर हो गया है। कैचमेंट बढ़ने व ऊपर का जोहड टूटने से यह खानपुर बांध टूट गया।

जाहरडी, भगेरी, खानपुर घासोली जाजोर, माचारोली, करवड, कनोनपुर, कामेड बगड़ तिराहे के पास नाला कुल मिलकर छोटे-छोटे 70-80 जोहड पाल तथा बांध टूटे हुए हैं। अतरिया नदी के ऊपर बना तट बांध भी छह जगह से टूट गया। नदी ने अपना पुराना रास्ता बदल दिया। आधा किमी. चौडाई में नदी ने गॉवों, खेतों, घरों को उजाडकर अपना पाट बनाती हुई बह गई । मीलों-मील लम्बे पाट में सैकड़ों गांव तेज धारा में बह गया। हरियाणा, राजस्थान व उत्तरप्रदेश के हजारों गांव बाढ की चपेट में है।

बीजवा के पास दिल्ली-अलवर रोड़ को भी इसी जल धारा ने बहा दिया। सडक बनाने के लिए इसी बम्बोरा जोहड की पाल के साथ छेड-छाड का परिणाम ही सड़कों के लिए भी बरबादी का कारण बना। दिल्ली से आने वाली दोनों बडी सड़कें तो बन्द हो गई थी और भी सैंकड़ों छोटी सड़कों को बाढ़ का पानी बहा कर ले गया। पूरे के पूरे गांव जल प्लावन कर गया । इस जल प्लावन ने लोगों को सहज रूप से चलने वाली जिन्दगी में निराशा पैदा कर दी। बांधोली के बास में सतनामसिंह जैसे नौजवान बाढ़ से पहले शराब नहीं पीते थें। ये अब अपने घर का सब सामान बाढ़ में बह जाने की चिन्ता में गम में शराब पीने लगे है । यहीं के कश्मीरसिंह फौजी जिसका एक पक्का कमरा पूरे गांव में बाढ़ की चपेट

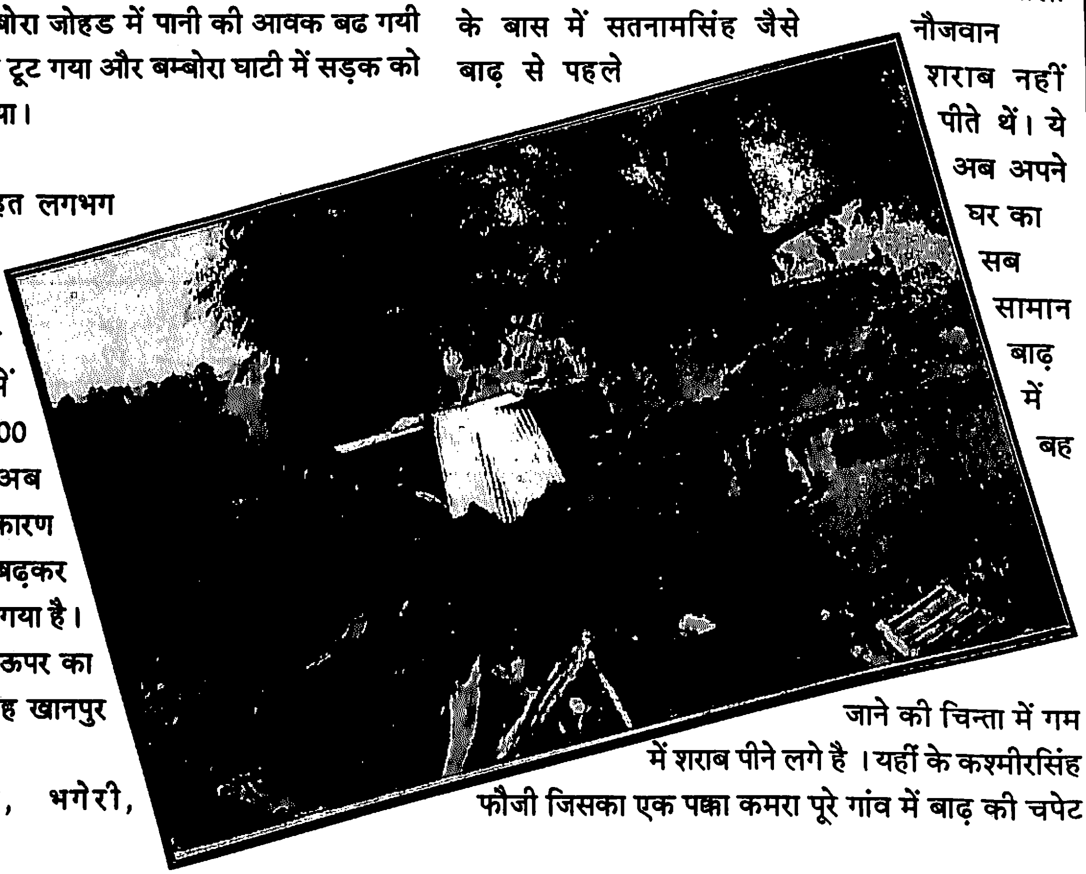

से बच गया, वह भी 6 फुट ऊँचाई तक बाढ़ का पानी भर गया था। शेष चार बासों में बसे 200 कच्चे पक्के मकान तो पूर्णतया: बह गये। यहां का पक्का गुरूद्वारा बाढ़ में बह गया। अब केवल कुछ पत्थर दिखाई देते हैं।

इस गांव में आज भी 11-02-97 को बाढ़ प्रभावित एक सौ एक परिवार बाबा लालदास के मन्दिर में शिविर लगाकर रह रहे हैं। दो परिवारों में लडकियों की शादी हेतु दहेज का सामान इक्कठा करके रखा था, वह सब बह गया। इसके इकलौते भाई ने तो चिन्ता व निराशा में अपनी जीवन लीला ही समाप्त करने का प्रयास किया था, वह भी रोकर कहने लगा मैं मर जाता तो यह दिन नहीं देखना पडता।

सरदार सितारासिंह पंच कहता है कि अब हमे कहीं दूसरी जगह जाकर बसना चाहिए। इस स्थान पर मरने के लिए दोबारा आकर नहीं बसना। दूसरा पंच दीवानचन्द कहता है सरकार को शर्म आनी चाहिए हम जीवन -मौत से जूझ रहे हैं तब भी तहसीलदार कहता है कि वहीं चले जाओ जहां से आये हो।

अव्यवस्थित विकास ही विनाश का कारण बना

अतरिया बांध पर गाँव के पास सिमरका चौकी पर पहले सुमेला, अर्जुन, लक्ष्मण, तीन सरकारी आदमी रहते थे। जो लोगों को बाढ़ व पानी की स्थिति से अवगत कराते रहते थे। लोग खतरे के समय यहां से हट जाते थे, लेकिन यहां उस रात एक भी आदमी नहीं था, जो हमें सावधान करता। चौकी पहले साल बरसात में गिर गई थी। साल भर के बाद भी वह अब तक दोबारा नहीं बन पाई। सरकार ने यहां किसी व्यक्ति की ड्यूटी भी नहीं लगाई। हमें डूबोकर मारने वाली यह सरकार ही है और यह सरकार दोबारा मारने के लिए फिर हमें वहीं भेज रही है। गंगीराम टोलीवास निवासी ने कहा अब वहा जाने के लिए कुछ बचा ही नहीं। घर जहां थे वहां अब नदी बन गई। अब वहां मकान नहीं बनेंगे। खेतों पर पांच फुट मिट्टी कंकर पत्थर जम गये हैं। जिसमें अब कोई फसल पैदा होने की गुंजाइश नहीं।

अतरिया बन्धा टूटने से अब भी वहां नहीं बह रही है बीच-बीच में टापू बन गये है। इन टापू और खांईयों को सुधारना, असम्भव तो नहीं पर बहुत मुश्किल काम है। जमीन की मूल कीमत से कई गुणा अधिक कीमत इसे सुधाने में लगेगी। हमारी औकात इसे सुधारने की नहीं है।

सरदारसिंह निवासी नाल ने कहा सरकार ने तो लाश तक भी नहीं उठाई, वहां हमने सरकारी लोगों से बार-बार लाश उठाने के लिए कहा, तब जाकर लाश उठाई गई। पता नहीं कहा से इतनी लाश बह कर आई थी, मरे पशुओं की संख्या का तो कोई अन्दाजा ही नहीं लगा सकता था। अगिनत पशुओं की लाश यहां से बह कर गई बहुत दिनों तक चारों तरफ बदबू आती रही।

बांधोली का बास के जो परिवार लालदास के मन्दिर में शिविर लगाकर रह रहे थे उन सब की प्रशासन से एक मुख्य मांग है, दूसरी जगह बसने के लिए भूमि प्राप्त करना जिलाधीश ने आश्वासन भी दिया, लेकिन बसने की जगह इन्हें कब मिलेगी इसका इन्हें इन्तजार है। जब तक इन्हें बसने के लिए जगह नहीं मिलती तब तक इस मन्दिर में

पर्यटकों को लुभाने के साथ तेज बहाव मौत भी बन जाता हैं, पाण्डूपोल में : फोटो : जीतेन्द्र जीतू

मुद्रक : इन्द्रा प्रिन्टर्स (ऑफसेट), रामगंज, अलवर ✆ : 20522